RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मई 2026
अंक 476 ● मई 2026

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

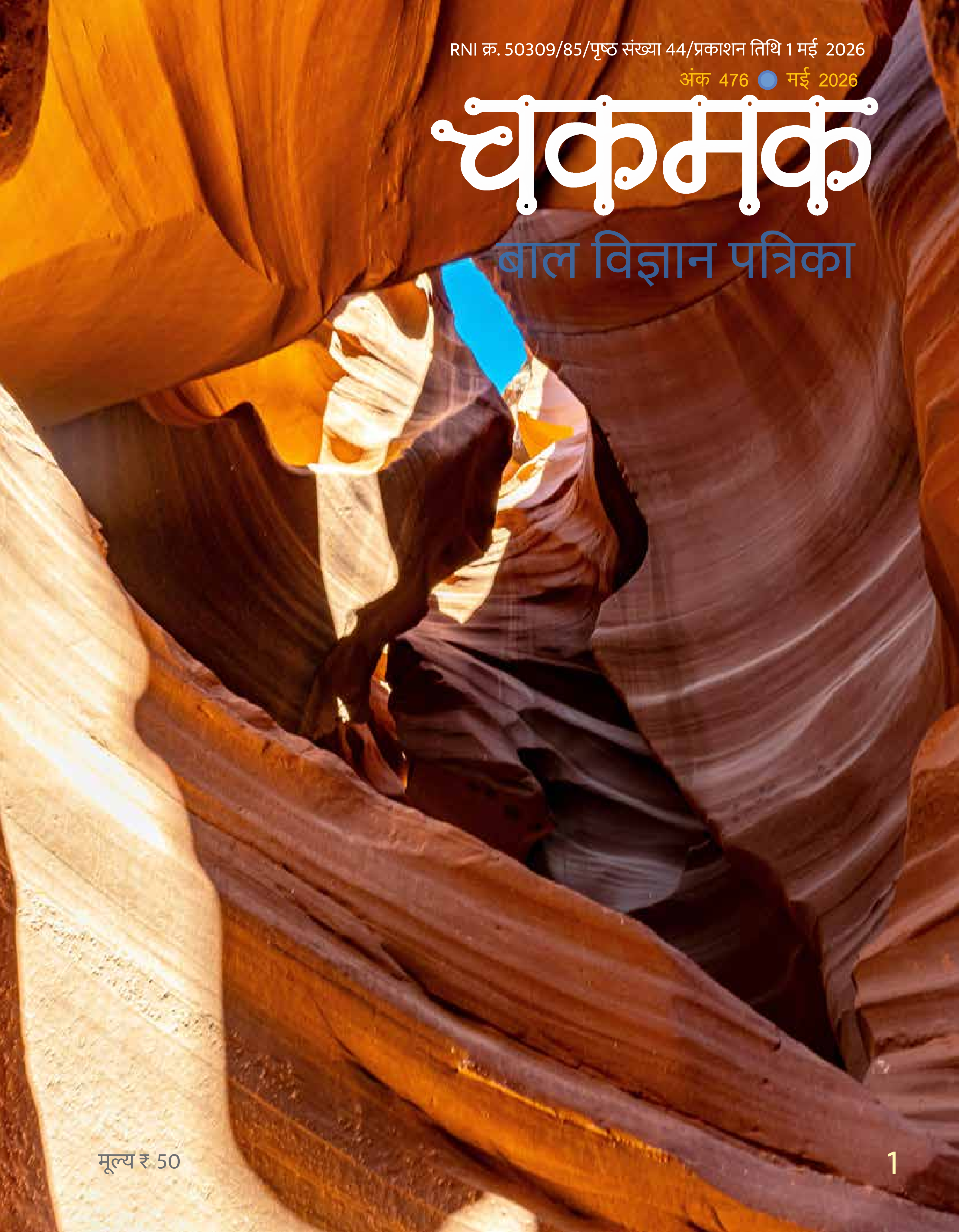

मूल्य ₹ 50

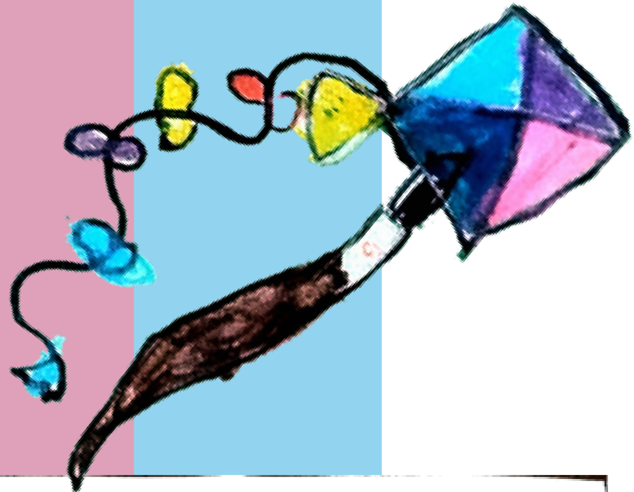

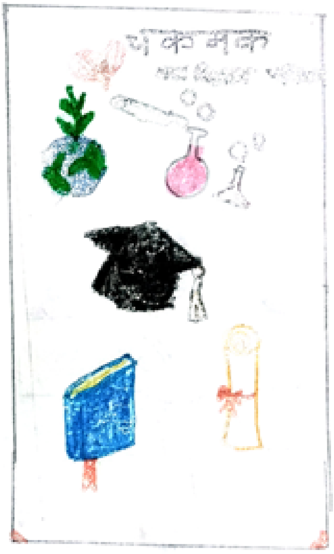

प्रिय चकमक,

तुमने मेरे को एक नई ऊँचाई दी है पढ़ाई की। और इसमे मेरे लेने पर मज़ेदार तरीके मे बात समझाई। मेरे लिए तुम खास हो। चकमक, ऐसे ही जारी रखना क्योंकि ये सारी रचनाऐं, चित्र, कथाएं -क्यों मेरे दिल मे बस रही हैं। चकमक, क्या आपको मेरा विज्ञान वाला जवाब अच्छा लगा? मेरे जवाब को आप अपने सुंदर पन्नो पर छापना। मुझे इंतजार रहेगा......

तुम्हारी नियमित पाठक

'यक्षिका'

चकमक हो तो ऐसी है।

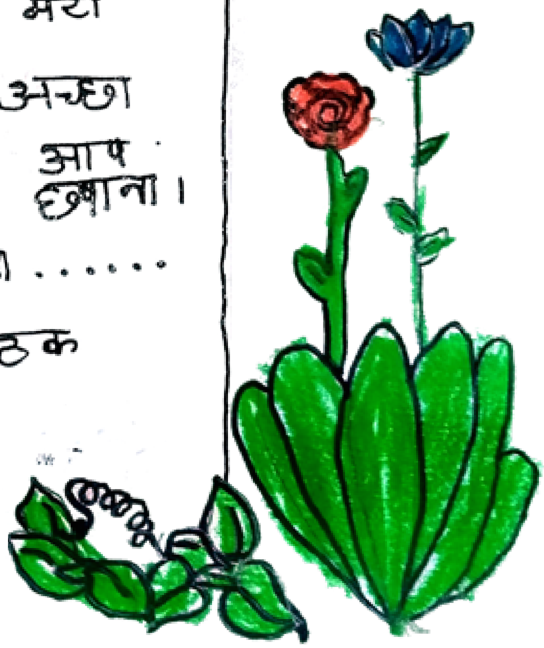

यक्षिका, दूसरी, बद्रीपुर, देहरादून, उत्तराखण्ड

अंक 476 मई 2026

चकमक

इस बार

मैंने खत लिखा ...
यक्षिका 2

पत्ते-पत्तू
प्रभात 4

एंटीलोप कैन्यन
इशिता देबनाथ बिस्वास 6

मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 21
आर एस रेश्मा राज, ए वी माधवन व साथी 10

फिल्मी बातें: काली चिड़िया ...
वरुण ग्रोवर 12

तुम भी बनाओ
रक्षिता सैनी 16

क्यों-क्यों 18

अन्तर ढूँढो 22

लहरा के, बल खा के
पीयूष सेकसरिया 23

भूलभुलैया 27

अभयारण्य में बाघ
चन्दन यादव 28

चित्रपहेली 30

अकाल और उसके बाद
नागार्जुन 32

अकाल और ...: एक टिप्पणी
नरेश सक्सेना 33

माथापच्ची 34

मेरा पन्ना 36

तुम भी जानो 43

आवरण फोटो: एलेक्जेंडर नाउमान
https://pixabay.com/photos/usa-america-canyon-sandstone-light-9889582/

सम्पादक
विनता विश्वनाथन
कनक शशि अनिल

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि अनिल

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर: 10107770248
IFSC कोड: SBIN0003867
कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

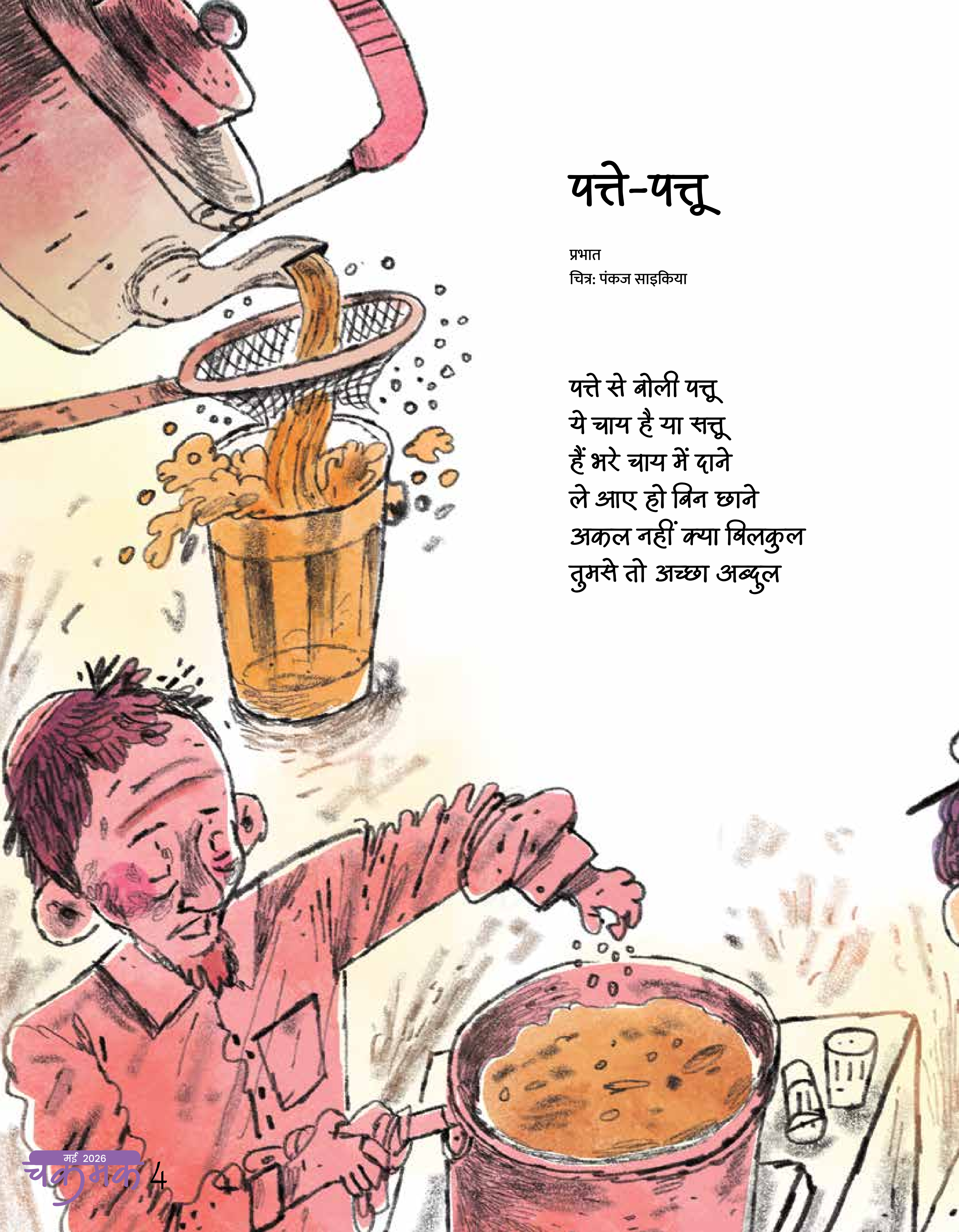

पत्ते-पत्तू

प्रभात
चित्र: पंकज साइकिया

पत्ते से बोली पत्तू
ये चाय है या सत्तू
हैं भरे चाय में दाने
ले आए हो बिन छाने
अकल नहीं क्या बिलकुल
तुमसे तो अच्छा अब्दुल

वो चाय बनाता अच्छी
उससे भी बढ़िया मच्छी
मच्छी से बढ़िया लस्सी
लस्सी से बढ़िया सब्ज़ी
पर तुम्हें न आता कुछ भी
यूँ तो तुम भी हो अच्छे
पर खा जाते हो गच्चे
मत खाया करो न गच्चे

पत्तों में सबसे अच्छे
पत्तू के प्यारे पत्ते
जब चाय मँगाए पत्तू
मत लाया करो सत्तू

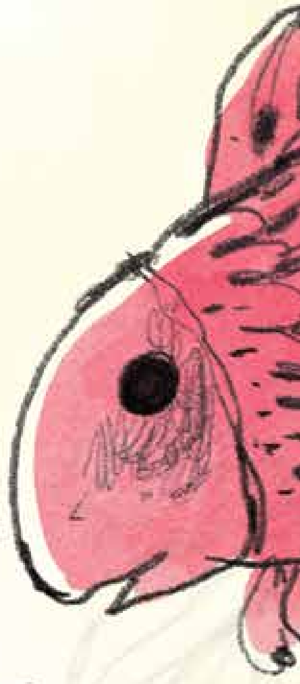

एंटीलोप कैन्यन

एक जगह जहाँ पानी चट्टानों से होकर गुज़रता है

लेख व फोटो: इशिता देबनाथ बिस्वास

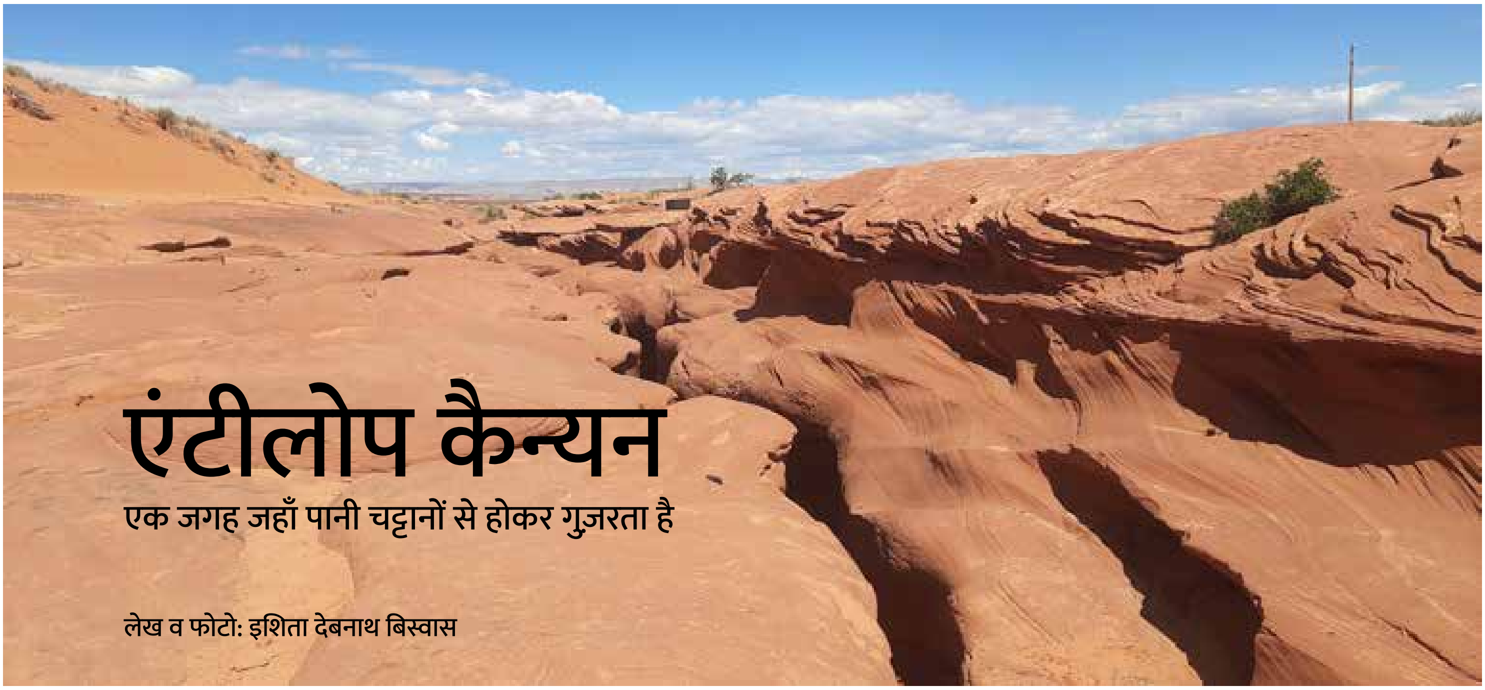

जब कोई नदी लम्बे समय तक कठोर चट्टानों को काटते हुए बहती है तो वह गहरी और खड़ी किनारों वाली घाटियाँ बना सकती है। ऐसी घाटियों को जिनके तल में नदी बहती है, उन्हें 'कैन्यन' कहते हैं।

इन पन्नों में दी गई तस्वीरों को देखो। यह बलुआ पत्थर (sandstone) की चट्टानों से बने दृश्य हैं। क्या तुम सोच सकते हो कि इसके भीतर चटक रंगों वाली एक जीती-जागती दुनिया छिपी है? चूँकि मैंने इस जगह को पहले तस्वीरों में देखा था, इसलिए मुझे पता तो था कि यह रास्ता हमें कहाँ ले जा रहा है। फिर भी उस गर्मी में फिसलती हुई रेत और चट्टानों पर चलते हुए यह अनुमान लगाना लगाना मुश्किल था कि आगे क्या आने वाला है।

ये है एंटीलोप कैन्यन की अद्भुत दुनिया। यह संयुक्त राज्य अमेरिका के एरिज़ोना राज्य में 'नवाहो नेशन' की भूमि पर स्थित है। नवाहो लोगों की भाषा में एंटीलोप कैन्यन यानी "वह जगह जहाँ पानी चट्टानों से होकर गुज़रता है।" तुमने शायद इसकी तस्वीरें कम्प्यूटर के वॉलपेपर, पत्रिकाओं या सोशल मीडिया पर देखी होंगी।

कैसे बने एंटीलोप कैन्यन?

अमेरिका के आज के एरिज़ोना और कोलोराडो राज्य जुरासिक काल के दौरान एक बड़ा रेगिस्तान हुआ करते थे। यहाँ चारों ओर रेत के विशाल टीले थे। समय के साथ ये टीले धीरे-धीरे रेत, मिट्टी और कंकड़ की परतों में बदल गए, जो सख्त होकर चट्टानें बन गईं। इन चट्टानों को ही नवाहो सैंडस्टोन कहते हैं। और इन्हीं चट्टानों से बनी हैं कैन्यन की वो दीवारें जिन्हें हम आज देखते हैं।

इस कैन्यन की दीवारों पर दिखने वाले लाल-नारंगी रंग चट्टानों में मौजूद लोहे के लम्बे समय तक ऑक्सीजन के साथ क्रिया करने से बने हैं। बाद में इस क्षेत्र की भूमि ऊपर की ओर उठी, जिससे कोलोराडो पठार बना। इसके कारण अचानक आने वाली बाढ़ों (flash floods) और कटाव (erosion) ने मिलकर धीरे-धीरे इस कैन्यन को तराशा। बार-बार बलुआ पत्थरों के बीच से पानी बहता रहा और चट्टानें कटती गईं। इस तरह हज़ारों सालों में यह कैन्यन बना।

पवित्र भूमि

एंटीलोप कैन्यन केवल एक प्राकृतिक चमत्कार ही नहीं है, बल्कि यह एक रूहानी और पवित्र स्थल भी है। इसका इतिहास भी इसकी बनावट की तरह ही समृद्ध, परतदार और पुराना है। नवाहो लोग इसे पवित्र स्थल मानते हैं। कैन्यन के सँकरे, घुमावदार रास्ते और उनमें ऊपर से छनकर आती रोशनी उनके लिए एक खास अर्थ रखती है। वे मानते हैं कि यह धरती माँ के गर्भ का प्रतीक है, जहाँ से नया जीवन शुरू होता है और शुद्धि होती है। इस कैन्यन के भीतर चलना किसी रूहानी यात्रा जैसा लगता है – अँधेरे से उजाले की ओर, और अज्ञानता से ज्ञान व नवजीवन की ओर।

नवाजो नेशन, जिसे नवाजो भूमि भी कहा जाता है, संयुक्त राज्य अमेरिका में नवाजो लोगों का एक मूल अमेरिकी रिज़र्वेशन है। संयुक्त राज्य अमेरिका में 'इंडियन रिज़र्वेशन' ज़मीन का एक ऐसा इलाका होता है, जिस पर यू. एस. सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त किसी मूल अमेरिकी कबीले का अधिकार और शासन होता है। (ऐतिहासिक रूप से मूल अमेरिकियों को 'इंडियन' कहा जाता था। माना जाता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि इतालवी खोजकर्ता क्रिस्टोफर कोलंबस जब भारत की तलाश में निकले थे, तो रास्ता भटक गए थे और यहाँ जिन लोगों से उनकी मुलाकात हुई, उन्हें उन्होंने गलती से 'इंडियन' कह दिया था।) नवाजो लोग, संयुक्त राज्य अमेरिका के दक्षिण-पश्चिमी हिस्से के मूल निवासी हैं।

लोकप्रिय भूमि

बीसवीं सदी के मध्य तक एंटीलोप कैन्यन के बारे में केवल नवाहो लोग ही जानते थे। वे इसे एक पवित्र स्थान मानते थे और बाहरी लोगों को यहाँ आने की इजाज़त नहीं थी। नवाहो परम्परा के अनुसार, लगभग 1931 में, सू त्सोसी नाम की एक युवा नवाहो लड़की भेड़ें चराने गई थी। भेड़ें चराते-चराते उसे बलुआ पत्थर में एक सँकरी दरार दिखी। यह दरार आगे चलकर उसी जगह पर पहुँची, जिसे आज अपर एंटीलोप कैन्यन कहा जाता है। इस जगह की रोशनी और चट्टानों की आकृतियों से वह बहुत प्रभावित हुई। लौटकर उसने अपने समुदाय को इसके बारे में बताया और इसकी चर्चा शुरू हुई। इस तरह नवाहो लोग इसकी बात बाहर भी करने लगे और बाहरी लोगों को कैन्यन घुमाने लाने लगे।

1990 के दशक की शुरुआत में इस कैन्यन की तस्वीरें दुनिया भर में लोकप्रिय होने लगीं। कई यात्री इसकी सुन्दरता देखने आने लगे। अचानक तेज़ बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा के बाद यहाँ सुरक्षा के नियम कड़े कर दिए गए हैं। आज सभी पर्यटक अधिकृत नवाहो गाइड्स के साथ ही यहाँ जा सकते हैं। इससे यह जगह सुरक्षित रहती है और नवाहो संस्कृति का सम्मान भी बना रहता है।

ऐसा ही एक युवा गाइड हमें निचले एंटीलोप ढाँचों के बीच सैर पर ले गया और साथ-साथ उस जगह से जुड़ी कहानियाँ भी सुनाता रहा। जैसे-जैसे हम नीचे उतरते गए, तापमान भी कम होता गया। यह सैर आसान नहीं थी, क्योंकि चट्टानें फिसलन भरी थीं और खड़ी दीवारों पर चढ़ने के लिए सँकरी दरारों के बीच बनी पतली सीढ़ियों का इस्तेमाल करना पड़ता था। गुफा जैसे दिखने वाले ये अद्भुत ढाँचे, कुछ जगहों पर एक जादुई गूँज भी पैदा करते हैं। गाइड ने अपने मूल कबीले 'नवाजो' से जुड़ी एक अनोखी

बाँसुरी बजाकर इस गूँज का आनन्द लिया। मैं उसके इस प्रदर्शन से बहुत प्रभावित हुई और उस पल को कैमरे में कैद करना चाहती थी। लेकिन उस वाद्ययंत्र की पवित्रता को देखते हुए, वह नहीं चाहता था कि मैं उसका वीडियो बनाऊँ। हालाँकि अपनी तस्वीर खिंचवाने में उसे कोई दिक्कत नहीं थी।

चूँकि बाढ़ कैन्यन को वर्तमान में भी आकार दे रही हैं, इसलिए एंटीलोप कैन्यन हमेशा बदलता

रहता है। पानी और हवा इसे लगातार आकार देते रहते हैं, इसलिए यह कभी भी बिलकुल एक जैसा नहीं दिखता। तो भले ही मैंने इस जगह को तस्वीरों में देख रखा था, फिर भी उस पल असल ज़िन्दगी में मैंने जो कुछ देखा, वह बिलकुल अनोखा था – कुछ ऐसा जो पहले कभी नहीं देखा गया था।

भाग - 21

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज़ की अगली कड़ी...

आर एस रेश्नू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन,
दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

ब्लैक वॉटल
(Black wattle)

वैज्ञानिक नाम:
अकेशिया मरनिसाय् / Acacia mearnisii

मूल: ऑस्ट्रेलिया

कैसे पहुँचा:
1861 में नीलगिरि की पहाड़ियों में इसे बड़ी संख्या में लगाया गया ताकि ऊटी और उसके आसपास बसे यूरोपीय लोगों को जलाऊ लकड़ी और कोयला मिल सके।

ब्लैक वॉटल एक सदाबहार पेड़ है जो 15 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। इसके तने का व्यास 10-45 सेंटीमीटर हो सकता है। कम उम्र के पेड़ों की छाल चिकनी और स्लेटी-भूरी रंग की होती है। ज़्यादा उम्र के पेड़ों में छाल भूरे-काले रंग की हो जाती है और इनमें दरारें बन जाती हैं।

यह पेड़ शाखाओं वाला होता है और इसकी टहनियाँ रोएँदार होती हैं। मुख्य शाखाओं से निकलती टहनियों से छोटी टहनियाँ निकलती हैं। इन टहनियों पर गहरे जैतूनी-हरे रंग की छोटी-छोटी पत्तियों की 8-12 जोड़ियाँ होती हैं। यानी कि यह द्विपक्षी संयुक्त पत्तियाँ (bipinnately compound) होती हैं। इसके फूल गोलाकार, क्रीम-सफेद से हल्के पीले रंग के होते हैं और गुच्छों में खिलते हैं। ब्लैक वॉटल की फलियाँ बीजों के बीच सिकुड़ी हुई होती हैं।

असर

ब्लैक वॉटल के बागान शोला वन और घास के मैदानों के बड़े हिस्से पर फैल गए हैं। इससे पश्चिमी घाट के पहाड़ी पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystem) की स्वाभाविक जैव विविधता पर असर हुआ है। पलनी की पहाड़ियों में किए गए शोध से पता चलता है कि ब्लैक वॉटल के बागानों की वजह से झरनों का बहाव कम हो गया है और मिट्टी में नमी भी घट गई है। इन बागानों में पक्षियों की संख्या और विविधता आसपास के शोला जंगलों की तुलना में कम है।

बीजों के अलावा यह पौधा जड़ों से उत्पन्न तनेदार 'सकर' (sucker) से भी फैलता है। इस तरह ये घने झुरमुट बना लेता है जो अन्य किस्म के पौधों को पनपने नहीं देता।

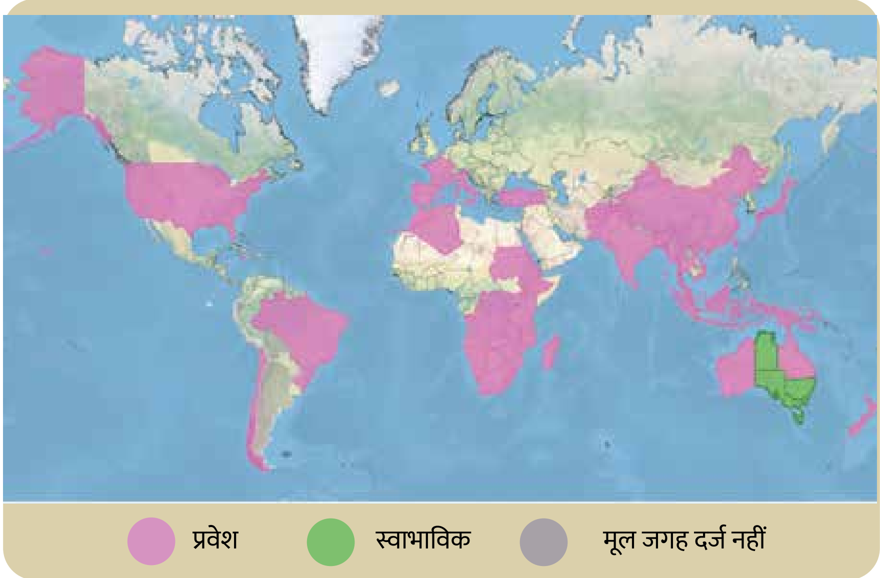

बन्दोबस्त

ब्लैक वॉटल को हटाने के लिए पेड़ों को काटकर निकालने या उखाड़ने का तरीका अपनाया जाता है। बारिश के मौसम के बाद छोटे-छोटे पौधों को हाथ से उखाड़ा जा सकता है और बड़े पौधों को सूखे मौसम की शुरुआत में काटा जा सकता है। घास के मैदानों में जहाँ-जहाँ यह फैल रहा हो, वहाँ से इसे हटाने पर विशेष ध्यान दिया जा सकता है।

इसके सूखे पेड़ों को भी सावधानी से हटाया जाना चाहिए ताकि ये पक्षियों के लिए बसेरा न बनें या फिर आग लगने का जोखिम न रहे। मिट्टी में इसके बीजों के भण्डार को खतम करने के लिए कई सालों तक लगातार मेहनत की ज़रूरत होती है क्योंकि इनकी सुप्तावस्था (मिट्टी में दबने से लेकर इनके सक्रिय होने की अवस्था तक का समय) काफी लम्बी होती है।

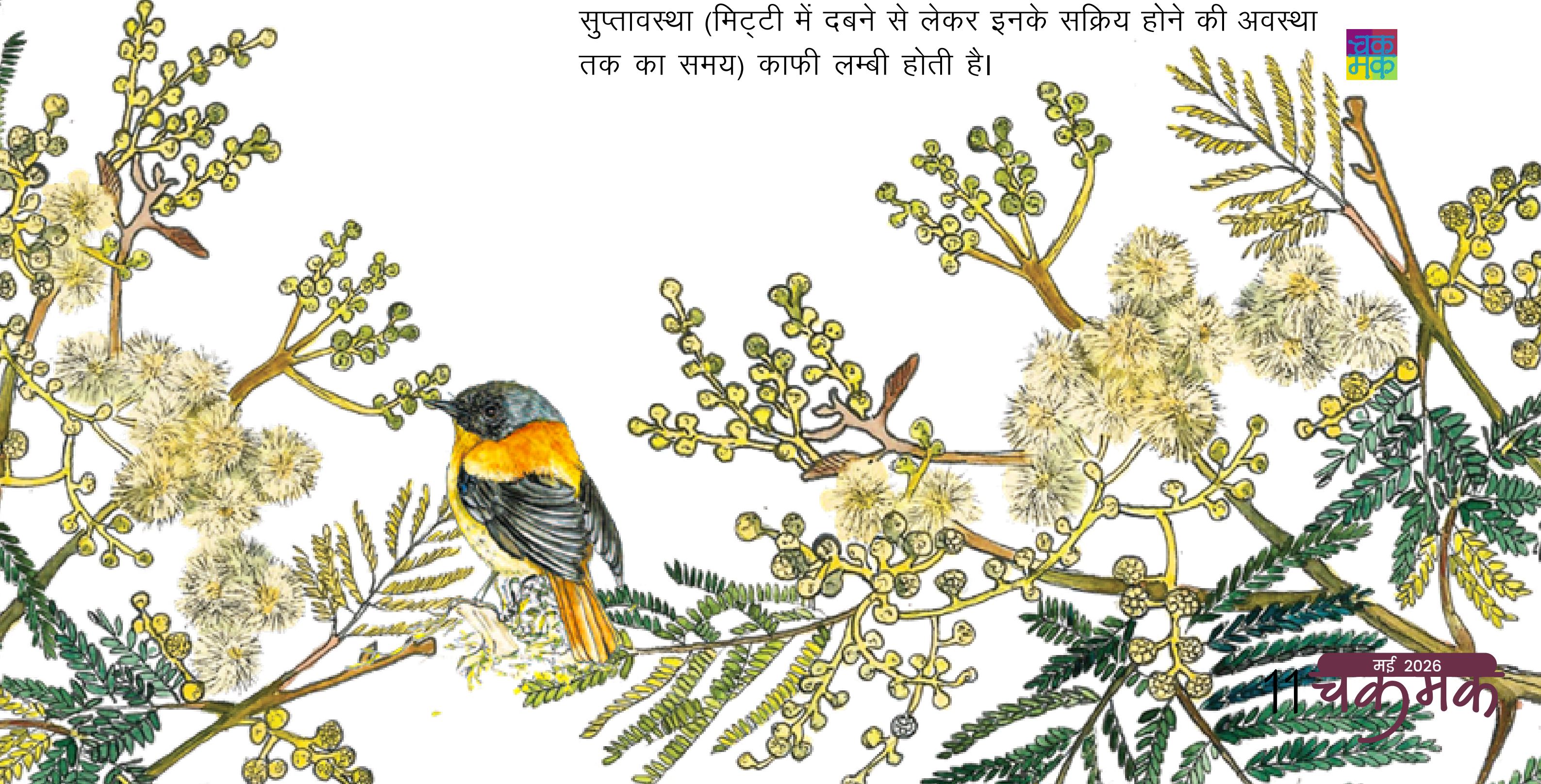

बातें फिल्मी

काली चिड़िया, सूअर और बचपन
मराठी फिल्म *फैन्ड्री*

वरुण ग्रोवर

जाब्या को एक काली चिड़िया की तलाश है। चमकीली, काली, छोटी-सी यह चिड़िया हमारे साँवले, छोटे-से जाब्या को गोरा कर देगी। जाब्या को यह चिड़िया ढूँढनी है, उसको मारना है, जलाना है और उसकी राख अपने चेहरे पर रगड़नी है। जब जाब्या गोरा हो जाएगा तो शालू उसे पसन्द करने लगेगी। जाब्या को लगता है कि अभी तो शालू उसे पसन्द नहीं करती। नहीं लगता नहीं है, ऐसा जाब्या को पता है। जाब्या ने देखा है कि कैसे एक लावारिस सूअर जब शालू की दोस्त को गलती से छू भर गया था तो शालू उस दोस्त को घर ले गई थी ताकि उसे नहलाकर शुद्ध किया जा सके। और जाब्या तो दिन भर सूअरों को पकड़ने का, मारने का ही काम करता है। कहीं किसी के घर के बाहर की नाली में सूअर फँस जाता है तो जाब्या को ही निकालने को कहा जाता है। जैसे सूअर का नाली में गिरना जाब्या की ही गलती है। गाँव की वर्ण-व्यवस्था में जाब्या और उसका दोस्त पिरया सबसे नीचे आते हैं। पूरी कक्षा में बाकी सब 'सामान्य' बच्चे हैं, सिर्फ जाब्या और पिरया ही नीची जाति के हैं, दलित हैं। और इसीलिए जाब्या को काली चिड़िया की राख चाहिए। काली चिड़िया की राख जाब्या के माथे से सूअर का निशान मिटा देगी। ऐसा जाब्या को लगता है।

नागराज मंजुले की मराठी फिल्म *फैन्ड्री* (सूअर या सूअर का बाड़ा) जाब्या की कहानी है। दलित आन्दोलन के जन्म-स्थान रहे महाराष्ट्र के एक गाँव में रहनेवाले जाब्या की कहानी। फिल्म शहरी लोगों को परेशान करती है। कुछ कहते हैं ऐसा भेदभाव अब नहीं होता। कुछ कहते हैं कभी नहीं होता था और कुछ हैं जो यह तक कहते हैं कि इसमें गलत क्या है? तीनों सूरत में यह फिल्म परेशान ज़रूर करती है।

चाणक्य गाँव के एक कोने में साइकिल पंचर बनाने की दुकान चलाता है। दुकान में एक कैरम भी है जिसे खेलनेवालों का यहाँ अड्डा लगा रहता है। चाणक्य जाब्या को मुफ्त में खेलने देता है क्योंकि उसे जाब्या पसन्द है। जाब्या को शालू पसन्द है यह बात भी सिर्फ पिरया और चाणक्य को ही पता है। चाणक्य भी दलित है, लेकिन वो जाब्या की उमर का नहीं है। इसलिए लोग उस पर धौंस नहीं जमा सकते। पर चाणक्य बाकी गाँव से अलग-थलग रहता है। गाँववाले कहते हैं वो काला-जादू करता है और इसलिए शाम के बाद उससे बचकर ही रहते हैं। जाब्या को काली चिड़िया के बारे में भी चाणक्य ने ही बताया है। ऐसा फिल्म में नहीं बताया गया है लेकिन मुझे लगता है कि चाणक्य खुद भी बचपन से उसी काली चिड़िया को ढूँढ रहा है।

फिल्म में जब भी जाब्या काली चिड़िया को मारने दौड़ता था, मेरा दिल चाहता था कि चिड़िया बचकर निकल जाए। और ऐसा हुआ भी। जाब्या को हमेशा ही चिड़िया बहुत दूर दिखती और वो अन्त तक उसे नहीं मार पाया। तो क्या मैं नहीं चाहता था कि जाब्या इस जातिवाद की जेल से बाहर आए? लेकिन क्या सच में सिर्फ रंग बदलने से जाब्या को इज़्ज़त मिल जाएगी? क्या इतना ही आसान हुआ करता है कभी कोई संघर्ष? और इस सब में बेचारी चिड़िया का क्या दोष?

लेकिन जाब्या उस जाति में पैदा हुआ जिसे सैकड़ों साल पहले कुछ ताकतवर लोगों ने 'निचली जाति' मान लिया था, इसमें जाब्या का क्या दोष? बाबा साहेब अम्बेडकर ने हिन्दू वर्ण व्यवस्था को एक ऐसी बिना दरवाज़ोंवाली बहुमंज़िला मीनार कहा था जिसमें हर इन्सान अलग-अलग मंज़िल पर जन्म लेता है। और क्योंकि किसी भी मंज़िल पर कोई दरवाज़ा नहीं है, इसलिए जो जहाँ जन्म लेता है उसे वहीं मरना पड़ता है। अपने पहले से तय किए गए वर्ण (या मंज़िल) पर।

यह फिल्म मैंने मुम्बई फिल्म फेस्टिवल में देखी थी। यहीं पर एक और डाक्यूमेंट्री फिल्म भी देखी थी – *सूर्य की छाया में*। यह अफ्रीका में तंज़ानिया की एक दुखद सामजिक स्थिति पर बनी है। तंज़ानिया में गरीबी और अशिक्षा के चलते यह मान्यता है कि एल्बिनो यानी सफेद दाग की बीमारी से ग्रसित लोगों को मारने से पुण्य और धन मिलता है। सफेद दाग से ग्रसित लोग वैसे ही सामाजिक रूप से शोषित होते हैं और ऊपर से इस गलत धारणा के चलते उनका जीना और मुश्किल हो गया है। यह फिल्म देखते हुए अचानक मुझे यह बात समझ में आई कि जो खुद दबाया हुआ और शोषित है, वो गरीबी से उबरने के लिए किसी भी कहानी में विश्वास कर सकता है। फिर वो कहानी किसी सफेद दाग के रोगी को मारने की हो या किसी मिथकीय काली चिड़िया को। शोषण और दमन का चक्र ऐसे ही चलता रहता है। और इसीलिए मुझे लगा कि नागराज मंजुले ने बहुत सोच-समझकर उस चिड़िया को काला रखा। वो चिड़िया हमारे जाब्या के रंग की ही होनी थी। वो चिड़िया किसी और रूप में खुद जाब्या ही है।

लेकिन फिल्म में बहुत से मज़ेदार पल भी हैं। जाब्या के दिमाग में एक फिल्म जैसी चल रही है शालू को लेकर। इस फिल्म का हीरो जाब्या है। इसलिए जाब्या के सपनों में हिन्दी फिल्मों जैसे गाने आते हैं जिनमें वो खुले आसमान के नीचे, रंग-बिरंगे कपड़े पहने नाच रहा है। मेरे लिए फिल्म का सबसे मज़ेदार दृश्य फिल्म के सबसे दर्दनाक दृश्य के ठीक बीच में आता है। जाब्या की पूरी कोशिश है कि उसके स्कूल के बाकी बच्चे उसे कभी सूअर पकड़ते ना देख लें। लेकिन वो दिन

उसकी ज़िन्दगी में आ ही जाता है। सूअरों की एक टोली ने गाँव को परेशान कर रखा है। जाब्या के पिता कचरू को आदेश मिलता है कि जल्द से जल्द सूअरों को पकड़कर उनका आतंक खत्म किया जाए। जाब्या की बदकिस्मती कि सूअर पकड़ने के लिए पूरा परिवार सुबह-सुबह स्कूल के टाइम पर ही निकल पड़ता है। बाकी बच्चे तैयार होकर स्कूल जा रहे हैं और जाब्या, अनमना, गुस्से और शर्म से भरा, अपने पिता, माँ और बहन के पीछे-पीछे चल रहा है। जाब्या का सबसे बुरा सपना सच होने वाला है। सिर्फ शालू ही नहीं, बाकी का स्कूल भी आज देख लेगा कि पढ़ाई में तेज़ और क्लास में सबसे आगे रहने वाले जाब्या की सच्चाई क्या है। फिल्म के इस दृश्य में मेरा दिल बैठ-सा रहा था।

एक तरफ स्कूल की सुबह की सभा चल रही है, दूसरी तरफ बगल वाले मैदान में जाब्या और उसका परिवार सूअर को पकड़ने के लिए घेरा बना रहा है। जाब्या रो भी रहा है, भागने की फिराक में भी है, पिता की मार भी खा रहा है, दूर से दोस्तों की नज़र से लज्जित भी हो रहा है। गाँव के कुछ बदतमीज़ लड़के, जो वहाँ मज़े लेने के लिए जमा हो गए हैं, उनके ताने भी सुन रहा है, और सूअर को पकड़ने की जुगत भी लगा रहा है। क्योंकि सूअर पकड़ा जाएगा, तभी तो जाब्या को इस नरक जैसे दिन से छुटकारा मिलेगा। (एक बार फिर, सोचा जा सकता है कि इसमें सूअर की क्या गलती कि सब उसे गन्दा जीव मानते हैं? है तो वो भी बाकी जानवरों की तरह ही चार पैर वाला!)

इस विचलित कर देनेवाले दृश्य के ठीक बीच में आया फिल्म का वह सीन जिस पर सबसे ज़्यादा तालियाँ बजीं। बहुत देर की भाग-दौड़ और चक्रव्यूह रचना के बाद आखिरकार ऐसा लगता है कि सूअर पकड़ में आ ही गया। उसे चारों तरफ से घेर लिया जाता है और अब बस जाब्या के पिता को आगे बढ़ना है और सूअर को दबोच लेना है। ठीक उसी वक्त स्कूल में राष्ट्र-गान शुरू हो जाता है। सब सावधान। जाब्या का मज़ाक उड़ानेवाले लफँगे भी, स्कूल से चोरी-छिपे इस परिवार को देख रही नज़रें

भी, और जाब्या का पूरा परिवार भी। सब सावधान, सिवाय उस घिरे हुए सूअर के। 56 सैकंड के राष्ट्रगान के दौरान सब देखते रहे और सूअर अपनी सुस्त चाल से चलता बना। जैसे कह रहा हो, होगा तुम्हारा देश, मेरा तो नहीं है।

आखिर में सूअर पकड़ा जाता है। तब तक पूरा स्कूल इकट्ठा हो चुका है। शालू ने अच्छी तरह से जाब्या को सूअर पकड़ते देख लिया है। आधा गाँव जाब्या की हँसी उड़ा रहा है। और रोता हुआ जाब्या चुपचाप अपने घर लौट रहा है। रास्ते में वही तमाशबीन लड़के जाब्या पर फिर से ताना कसते हैं। जाब्या गुस्से में दौड़ता हुआ एक बड़ा पत्थर उठाता है, और उस लड़के के माथे पर दे मारता है। यहाँ पर फिर से निर्देशक नागराज मंजुले ने एक चमत्कार किया है। वो पत्थर उड़ता हुआ आके सीधा सिनेमा के परदे पर लगता है और ज़ोर-से दर्द भरी चिल्लाने

निर्देशक नागराज के साथ जाब्या

की एक आवाज़ आती है। स्क्रीन पर अँधेरा छा जाता है और फिल्म पूरी हो जाती है। एक तरह से जाब्या ने वो पत्थर हम सब पर मार दिया। मित्र मिहिर पांड्या ने फिल्म से निकलते हुए कहा, “एक विद्रोह की शुरुआत के साथ यह फिल्म खतम हो गई।”

तुम भी बनाओ

रक्षिता सैनी

अखबार से बनाओ मुखौटा

जुगाड़:
गत्ता, पुराने अखबार, कैंची, फेविकोल, पानी, पेंसिल, मास्किंग टेप, पोस्टर कलर और पेंट ब्रश

1. गत्ते को चेहरे के आकार में काटो और उस पर पेंसिल से आँख, नाक और होंठ की आकृति बना लो।

2. आँखों वाले हिस्से को काट लो। अखबार व गत्ते से भौहें, कान, नाक और होंठ बनाकर मास्किंग टेप से चिपका लो।

3. अखबार की छोटी और पतली पट्टियाँ काट लो।

4. बराबर मात्रा में फेविकोल और पानी मिलाओ।

5. फेविकोल के घोल में पट्टियों को डुबोकर मुखौटे पर चिपकाओ। अब इसे सूखने के लिए रख दो।
तुम्हारा मुखौटा तैयार है। इसे मनचाहे रंगों से सजाओ। चाहो तो इसे दीवार पर लगाओ, या फिर कानों के नीचे छेद करके उसमें रस्सी बाँधकर अपने चेहरे पर पहन लो।

फूलदान

जुगाड़:
गुब्बारा, पुराने अखबार, कैंची, फेविकोल, पानी, पेपर कप, मास्किंग टेप, गोल डिब्बी, पोस्टर कलर, पेंट ब्रश, टिशु पेपर, रेगमार कागज़ (सैंडपेपर)

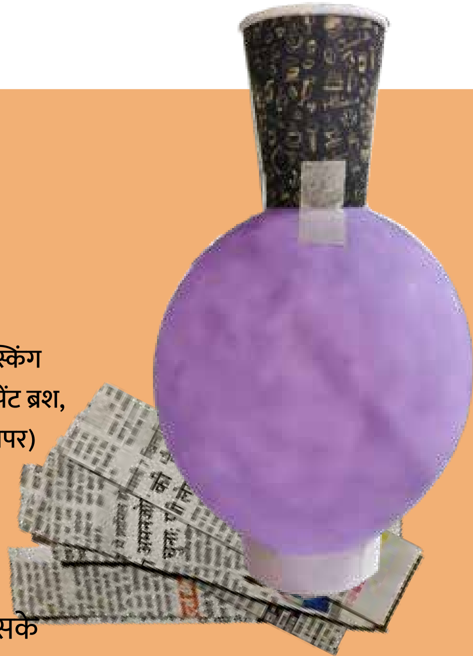

1. एक गुब्बारा फुलाओ। उसके नीचे एक गोल डिब्बी और ऊपर एक पेपर कप मास्किंग टेप से चिपका लो।

2. अब अखबार की पट्टियों को फेविकोल के घोल में डुबाकर इसके ऊपर चिपका लो। ऐसी पट्टियों की 2-3 परतें लगाओ और इसे सूखने के लिए रख दो।

3. इसे चिकना बनाने के लिए ऊपर से टिशू पेपर की 2-3 परतें लगाओ। पहली परत सूखने के बाद ही अगली परत लगाना। पूरी तरह सूख जाने पर रेगमार कागज़ से हल्का-सा घिस लो।

अब अपने फूलदान को तरह-तरह के रंगों से सजा लो। चाहो तो इसमें रखने के लिए कागज़ के फूल भी बना सकते हो।

क्यों-क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

कुछ लोग मानते हैं कि कुछ स्थितियों में युद्ध ज़रूरी हो जाता है, जबकि कुछ अन्य लोग मानते हैं कि किसी भी स्थिति में युद्ध ठीक नहीं होता। तुम्हें क्या लगता है—किन परिस्थितियों में युद्ध करना सही हो सकता है, और किन में नहीं? क्यों?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

यदि तुम्हें इन्सान के बदले और कुछ भी बनने का मौका मिले तो तुम क्या बनना चाहोगे, और क्यों?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

कुछ दिनों पहले हमारे और हमारे पड़ोसियों के बीच ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि दो परिवारों में लड़ाई की नौबत आ गई। हुआ यूँ कि पड़ोसियों ने हमारी ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया था। हमने उनसे बातचीत की कि यह ज़मीन हमारी है। पर वह नहीं माने। हमने पंचायत को बुलाया। गाँववालों को बुलाया और पटवारी को भी बुला लिया। हमने नाप भी की। वह ज़मीन हमारे भाग में ही थी। हमने उन्हें समझाया कि यह ज़मीन हमारे पूर्वजों की है और हम इस ज़मीन पर वर्षों से फसल उगा रहे हैं। लेकिन फिर भी वे नहीं माने। अन्त में हमारे सामने एक ही विकल्प बचा था। वो था लड़ाई। फिर हमें लड़ाई करनी पड़ी। ऐसा ही कुछ युद्ध में होता है। अगर कोई अपनी गलती मानने को तैयार न हो तो फिर ऐसी परिस्थितियों में लड़ाई ही करनी पड़ती है। वैसे मेरे हिसाब से समझौता ज़्यादा सही रहता है।

अजय कुमार, बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मुझे लगता है कि लड़ाई के 3 स्तर होते हैं। पहले हम उस व्यक्ति को प्यार से समझाएँगे। अगर वह व्यक्ति मान गया तो ठीक है। दूसरी बार हम उसे धमकी देकर समझा सकते हैं। अगर वह समझ गया तो ठीक है। लेकिन तब भी न माने तो तीसरी बार में हम उससे लड़ाई कर सकते हैं।

भावेश, आठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, हरियाणा

युद्ध एक भयंकर शब्द है। चारों ओर डर का माहौल छा जाता है। लोग अपने आप को घर में बन्द कर लेते हैं। या लोगों को अपना घर छोड़ना पड़ता है। उन्हें अपने प्रिय जनों को खोने का डर लगता है। मेरा नाम सिफत है। मैं दस साल की हूँ। लेकिन मेरे पास भी युद्ध का एक पर्सप्रेक्टिव है। मैं केवल अपने लिए नहीं लिख रही हूँ। मैं उन सारे बच्चों के लिए बात कर रही हूँ जिन्हें ऐसा करने का मौका नहीं मिला है।

युद्ध एक ऐसा समय होता है जब लोग मरते हैं। बच्चे अनाथ हो जाते हैं। स्कूल बन्द हो जाते हैं। दुकानें भी बन्द हो जाती हैं, जिससे सबकी परेशानियाँ बढ़ जाती हैं। मैंने सुना है तब बिजली भी कट जाती है तो रात को अँधेरे में डर लगता है। लोग भावनात्मक रूप से अस्थिर हो जाते हैं। यह सब सुनकर मुझे बहुत दुख होता है।

मेरे अनुसार युद्ध किसी भी स्थिति में नहीं होना चाहिए। मुझे लगता है कि बड़ों को समझदारी दिखानी चाहिए। मुझे लगता है कि बातचीत और दोस्ती युद्ध से भी ज़्यादा ताकतवर होती है। बड़ों को सोचना चाहिए कि जब वो किसी इमारत को तोड़ते हैं तो किसी बच्चे की खुशियाँ और भविष्य भी तोड़ देते हैं। मेरे अनुसार किसी भी दुनिया में शान्ति सबसे ज़रूरी चीज़ है ताकि कोई भी बच्चा बिना डरे सो सके। सन्त बुल्लेशाह ने भी कहा कि जब अहंकार खतम हो जाता है तो मामला खतम हो जाता है।

सिफत चनडोक, पाँचवीं, हेरिटेज एक्सपीरियंशल लर्निंग स्कूल, सेक्टर 62, गुरुग्राम, हरियाणा

युद्ध कभी किसी समस्या का सही समाधान नहीं होता क्योंकि इससे केवल विनाश और दुख ही मिलता है। जब दो पक्ष युद्ध कर रहे हों तो निर्दोष लोगों को अपनी जान, घर-बार गँवाना पड़ता है। बदले की भावना युद्ध को और बढ़ाती है। इससे हिंसा का सिलसिला खतम नहीं होता। एक युद्ध के बाद भी मन में नफरत और दुश्मनी बनी रहती है जो भविष्य में फिर से संघर्ष को जन्म देती है। इतिहास गवाह है कि युद्धों ने केवल तबाही मचाई है। वे कभी स्थाई शान्ति नहीं दे पाए। इसके विपरीत बातचीत और संवाद से समस्याओं का हल निकालना ज़्यादा समझदारी भरा तरीका है। जब लोग बैठकर शान्ति से अपनी बात रखते हैं तो एक-दूसरे को समझने का मौका मिलता है। इससे गलतफहमियाँ दूर होती हैं और आपसी विश्वास बढ़ता है।

ईशान्वी रॉय, चौथी, रमणा विद्यालय, महिन्द्रा वर्ल्ड सिटी, चंगलपेट, तमिलनाडु

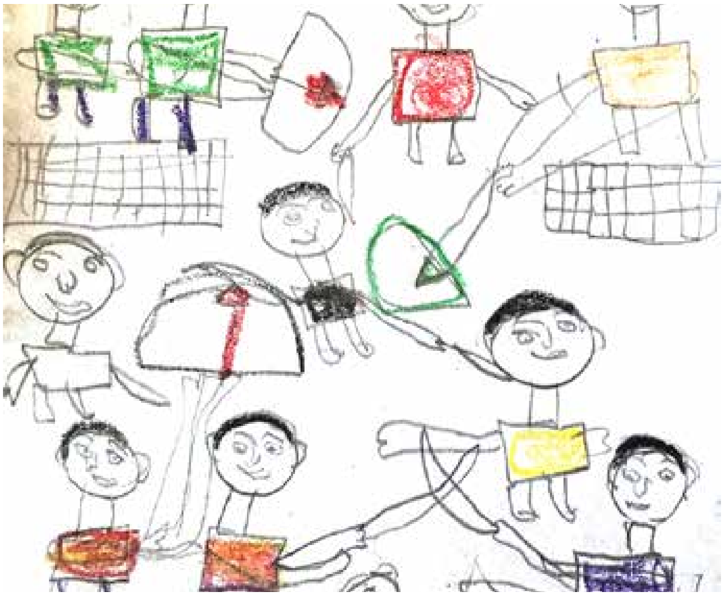

चित्र: अभिषेक, पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

क्यों क्यों

युद्ध करना सही तो नहीं होता है। लेकिन जब कोई अधर्म पर चलता है और लोगों को मारता है और अपनी मर्यादा में नहीं रहता है या अत्याचार करता है तो इन परिस्थितियों में युद्ध करना ज़रूरी हो जाता है।

अनिकेत अहिरवार, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

चित्र: साईश गुप्ता, सातवीं, हेरिटेज एक्सपीरियंशल लर्निंग स्कूल, सेक्टर 62, गुरुग्राम, हरियाणा

हमें युद्ध नहीं करना चाहिए क्योंकि लड़ाई करने से लड़ाई और बढ़ती है। हर बात पर लड़ाई करना ज़रूरी नहीं होता है। क्या पता बात करने से मसला खतम हो जाए। लड़ाई करके हम क्या हासिल कर लेंगे। ज़्यादा से ज़्यादा एक-दूसरे पर अपना गुस्सा निकाल लेंगे। इससे तो अच्छा है कि हम शान्ति से बात करके समस्या को सुलझा लें। एक-दूसरे को चोट पहुँचाकर हमें क्या मिलेगा। ईरान और यूएस में लड़ाई हो रही है। और लड़ाई की वजह से लोगों को भी बहुत नुकसान हो रहा है। जैसे अभी गैस की बहुत दिक्कत हो रही है। लड़ाई की वजह से बहुत लोगों की मौत भी हो रही है। और इस लड़ाई की वजह से कई सिपाही भी शहीद हो रहे हैं।

सृष्टि, आठवीं, मंज़िल संस्था, दिल्ली

मुझे लगता है कि हमें युद्ध नहीं करना चाहिए, क्योंकि युद्ध करने से हमेशा समस्या का सही समाधान नहीं होता। कई बार जो कारण युद्ध के पहले होते हैं, वे बाद में भी फिर से हो सकते हैं। लोग युद्ध में अपनी ज़मीन, सामान, सीमाओं और सुरक्षा की रक्षा के लिए जाते हैं। लेकिन इसमें बहुत नुकसान भी होता है। युद्ध के कारण लोगों को डर, चोट और परेशानी झेलनी पड़ती है। इसलिए हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम अपनी समस्याओं को बातचीत और समझदारी से हल करें। युद्ध की जगह शान्ति का रास्ता अपनाना ज़्यादा बेहतर होता है।

इशिका अग्रवाल, छठवीं, डीपीएस इंटरनेशनल, सेक्टर 50, गुरुग्राम, हरियाणा

हमारे स्कूल में लड़ाई के बारे में बातचीत हो रही है क्योंकि देशों के बीच लड़ाई चल रही है। लड़ाई नहीं करनी चाहिए क्योंकि इससे देशों भर में बरबादी हो रही है। युद्ध नहीं होना चाहिए। देशों को आपस में मिल-जुलकर रहना चाहिए।

कान्हा, चौथी, सर्वोदय कन्या विद्यालय, दीवान हॉल, दिल्ली

युद्ध को एक शारीरिक घाव की तरह समझना चाहिए। जिस प्रकार सर्जरी केवल तब की जाती है जब वह जीवन बचाने का अन्तिम उपाय हो उसी प्रकार युद्ध भी केवल अत्यन्त आवश्यक परिस्थितियों में ही किया जाना चाहिए। जब देश की सुरक्षा, स्वतंत्रता या लोगों की जीवन-रक्षा का प्रश्न हो तब युद्ध करना उचित माना जाता है। लेकिन यदि युद्ध स्वार्थ, अहंकार, लालच या द्वेष के कारण किया जाए तो वह बिलकुल भी उचित नहीं है। ऐसे युद्ध केवल विनाश, हानि और दुख को बढ़ाते हैं।

इसलिए यह कहा जा सकता है कि युद्ध समस्या का समाधान नहीं है। बल्कि यह और अधिक समस्याएँ पैदा करता है। वास्तविक समाधान शान्ति, संवाद और आपसी समझ के माध्यम से समस्याओं को सुलझाने में है ताकि युद्ध जैसी स्थिति उत्पन्न ही न हो।

अनन्या मनोज ए वी, दसवीं 'बी', रमणा विद्यालय, शोलिंगन्नूर, चेन्नई, तमिलनाडु

हमें युद्ध उन परिस्थितियों में करना चाहिए जहाँ सामने वाला युद्ध की तैयारी करके आया हो। अचानक से वार करे या फिर प्यार की भाषा न समझे और युद्ध करने के लिए उतावला हो, ये जानते हुए भी कि सामने वाला युद्ध नहीं करना चाह रहा है। फिर भी वो आगे बढ़े तब हमें युद्ध करना चाहिए। अगर हम उसे प्यार की भाषा समझाते रहे तो पता चलेगा कि वो हमें मारकर चला गया। हमें युद्ध उन परिस्थितियों में नहीं करना चाहिए जहाँ सामने वाला गुस्से में हो लेकिन प्यार की भाषा समझे और प्यार से बात करे। कभी-कभी हमें अपने गुस्से पर भी नियंत्रण रखना चाहिए।

युद्ध करने से कोई वीर नहीं बनते, बल्कि दूरियाँ बढ़ती हैं। रिश्तों में दरारें पड़ती है। हम कमज़ोर हो जाते हैं। कभी-कभी दूसरे लोग भी इसका फायदा उठाते हैं। युद्ध करना भी सही है, लेकिन समय पर। जब कोई हमारे आत्मसम्मान पर उँगली उठाए। इसमें युद्ध करना गलत नहीं होगा। लेकिन जब सामने वाला प्यार से बात करे और गलती होने पर माफी माँग ले, तो हमें उन लोगों से युद्ध नहीं करना चाहिए। वैसे समय और परिस्थिति के अनुसार दोनों ही उचित हैं।

उदिता कुमारी, बारहवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, दरभंगा, बिहार

अन्तर ढूँढो

एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में दस से ज़्यादा अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?

लहरा के बल खा के

पीयूष सेकसरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन

आज मैं तुमसे एक चीनी पहेली पूछता हूँ। एक ऐसे जीव का नाम बताओ, जो बिना पैरों के दौड़ता है, बिना फिन (flippers) के तैरता है और बिना पंखों के उड़ता है। इन्सान हमेशा से इन जीवों को लेकर हैरानी और डर दोनों महसूस करते रहे हैं। इनके अजीब शरीर और व्यवहार को समझाने के लिए लोककथाओं और धर्मों में तरह-तरह की कहानियाँ गढ़ी गई हैं। ये जीव हमारे बीच ही रहते हैं और खूब फलते-फूलते हैं। बताओ, ये कौन हैं? कोई अन्दाज़ा?

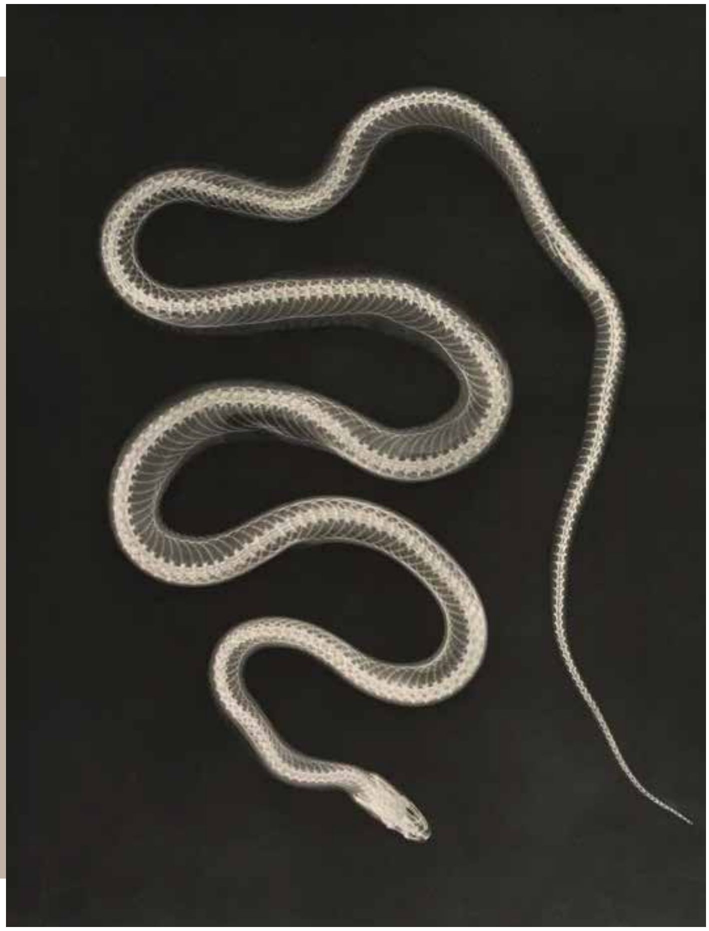

ये साँप हैं। साँप अकेले ऐसे जीव नहीं हैं जिनके पैर नहीं होते। कुछ तरह की छिपकलियों, केंचुओं, ईल जैसी मछलियों और सिसीलियन जैसे कुछ उभयचरों के भी पैर नहीं होते, या ना के बराबर होते हैं। लेकिन साँपों को अलग बनाती है इनकी बहुत लम्बी रीढ़ की हड्डी। इनकी रीढ़ की हड्डी 175 से 400 कशेरुकाओं से बनी होती है। कुछ साँपों में तो 600 कशेरुकाएँ तक होती हैं, जबकि मनुष्यों में 33 और एक सामान्य छिपकली में 65 कशेरुकाएँ होती हैं। संक्षेप में कहें तो साँपों में मुख्यत: एक लम्बी रीढ़ की हड्डी और एक बहुत छोटी पूँछ होती है। पूँछ इनकी कुल लम्बाई की एक तिहाई से एक चौथाई तक होती है। इतना ही नहीं, सिर के सबसे करीब की तीन कशेरुकाओं और पूँछ की कशेरुकाओं को छोड़कर बाकी सभी कशेरुकाओं में पसलियाँ होती हैं। साँपों को सिर से लेकर बहुत छोटी पूँछ तक लगभग कभी न खतम होने वाले छाती के रूप में देखा जा सकता है।

फोटो: विवेक शर्मा

तो आखिर बिना पैरों के साँप चलते कैसे हैं?

असल में, पूरे शरीर की कसरत से! ये अपनी कशेरुकाओं, पसलियों और त्वचा से जुड़ी सैकड़ों मांसपेशियों के तालमेल से ऐसा करते हैं। अधिकांश साँपों के पेट के शल्कों पर उँगलियों जैसे बहुत छोटे उभार होते हैं, जो हमें दिखाई नहीं देते। ये उभार पर्याप्त घर्षण पैदा करते हैं ताकि साँप आसानी से आगे बढ़ सकें, पीछे या बगल में फिसले बिना।

सिर्फ रेंगना ही नहीं...

ज़्यादातर लोग जब साँप के चलने के बारे में सोचते हैं, तो उनके दिमाग में S-आकार में लहराते हुए रेंगने की छवि बनती है। दुनिया भर में मौजूद साँप की लगभग सभी 4,000 किस्में इस तरह चल सकती हैं। लेकिन साँप सिर्फ इस तरह नहीं चलते। इसके अलावा इनके पास चलने के कम से कम दर्जन भर तरीके और हैं। ये अगल-बगल चलते हैं, सीधी रेखा में आगे बढ़ते हैं, तैरते हैं, उड़ते हैं या हवा में तैरते हुए आगे बढ़ते हैं यानी ग्लाइड करते हैं। यकीन मानो साँपों की कुछ किस्में तो कलाबाज़ी भी करती हैं।

फोटो: सीताराम शास्त्री सी

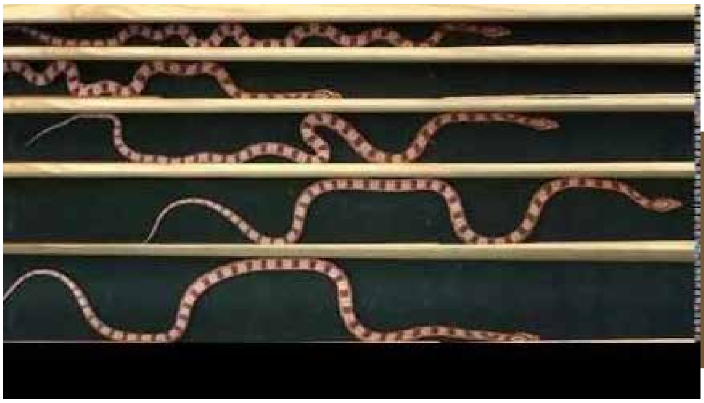

अकॉर्डियन जैसी चाल

ज़्यादातर साँप एक खास तरीके से चलते हैं जिसे 'कॉन्सर्टिना' चाल कहते हैं। इसमें ये अपने शरीर को बार-बार सिकोड़ते और फैलाते हैं, कुछ-कुछ अकॉर्डियन की तरह। साँप इस तरीके का उपयोग तंग सुरंग से निकलने, पेड़ के तने पर चढ़ने या शाखा पर सरकने के लिए कर सकते हैं।

अगल-बगल चाल

कुछ साँप, खासकर रेतीले इलाकों में रहने वाले, एक अलग तरीके से चलते हैं। इस तरीके को 'साइडवाइंडिंग' कहते हैं। ये लगभग अगल-बगल सरकते हुए अपने शरीर के कुछ हिस्सों को ऊपर उठाते हुए आगे बढ़ाते हैं। भारत में सॉ-स्केल्ड वाइपर (अफई) इस तरीके से चलने वाला एकमात्र साँप है। यह तरीका ढीली रेत पर बहुत काम आता है। इससे साँप रेत में धँसने और गरम रेत के साथ सम्पर्क में आने से बच जाते हैं। दक्षिणी अफ्रीका के नामीबिया और अंगोला के रेगिस्तानों में पाया जाने वाला छोटा वाइपर पेरिंगुए ऐडर तो अगल-बगल चलते हुए 30 किलोमीटर प्रति घण्टे तक की रफ्तार पकड़ सकता है। यह विराट कोहली की सबसे तेज गति के लगभग बराबर है!

कुछ सीधा रास्ता पकड़ते हैं

अजगर और बोआ जैसे बड़े व भारी साँप एकदम सीधी रेखा में चलते हैं, बिना दाएँ-बाएँ मुड़े। इसे 'रेक्टिलिनियर चाल' कहते हैं। यह रेंगने से पूरी तरह अलग है। इसमें साँप अपनी रीढ़ की हड्डी को सीधा रखता है और पेट की मांसपेशियों का उपयोग करके धीरे-धीरे आगे बढ़ता है। यह चाल देखने में धीमी और सहज लगती है। लेकिन यह काफी शक्तिशाली होती है। इससे भारी-भरकम साँप भी घुमाव के लिए ज़्यादा जगह लिए बिना आगे बढ़ पाते हैं।

फोटो: अतुल धमानकर

तैराक साँप

तैरने की बात करें तो लगभग सभी साँप अच्छे तैराक होते हैं। लेकिन समुद्री साँप, मीठे पानी के साँप और ज़मीन पर रहने वाले साँपों के शरीर में काफी बदलाव देखने को मिलते हैं। शरीर के पिछले हिस्से के चपटे होने और चप्पू जैसी पूँछ के कारण समुद्री साँप तैरने के लिए सबसे अच्छी तरह अनुकूलित होते हैं। मीठे पानी के साँप तेज़ी से तैरते समय अपने शरीर के लगभग दो-तिहाई हिस्से को चपटा कर लेते हैं। ज़मीन पर रहने वाले साँपों में तैरने के लिए ऐसी कोई खास विशेषताएँ नहीं होती हैं, लेकिन फिर भी ये तैर सकते हैं।

उड़ने वाले साँप

असल में साँप उड़ते नहीं हैं, बल्कि ग्लाइड करते हैं। ये पेड़ पर चढ़कर ऊँचाई से छलाँग लगाते हैं और अपनी पसलियों को फैलाकर अपने बेलनाकार शरीर को चपटा कर लेते हैं। इससे इनका शरीर पैराशूट जैसी संरचना में बदल जाता है। ये लगभग 100 मीटर तक ग्लाइड कर सकते हैं! भारत में 'उड़ने/ग्लाइड करने वाले' साँपों की तीन किस्में पाई जाती हैं।

Image credit: Evan Quah, BBC science Focus

और कभी-कभी कलाबाज़ी भी

सिर्फ इतना ही नहीं, दक्षिण पूर्व एशिया की दो किस्मों को तो कलाबाज़ी करते हुए भी पाया गया है। हाँ, सच में इन्हें पहिए की तरह लुढ़कते हुए देखा गया है। शोधकर्ताओं का अनुमान है कि ये शिकारियों को चौंकाने और भ्रमित करने के लिए ऐसा करते होंगे।

पता नहीं साँपों के बारे में अभी और कौन-कौन सी अद्भुत बातें जानना बाकी है।

विकास का 'बिग-बैंग'

हम अभी तक ठीक-ठीक नहीं जानते कि साँपों का विकास कब शुरू हुआ। लेकिन जब ये छिपकलियों से अलग रूप में विकसित होने लगे, तब पृथ्वी पर डायनासोरों का वर्चस्व था। साँप उस समय हाशिये पर रेंगते थे। फिर लगभग 12.5 करोड़ साल पहले साँपों के विकास में तेज़ उछाल आया। यह लगभग वही समय था जब पृथ्वी पर पहले फूल वाले पौधे दिखाई देने लगे थे। कह सकते हैं कि लगभग इसी समय विकास का ‘बिग-बैंग’ हुआ जिसने साँपों को इतनी विविधता दी। आज भी साँपों की अलग-अलग खासियतों की भरमार इसी बात को दिखाती है। मसलन साँप गन्ध और गर्मी का उपयोग करके अपने शिकार का सटीक पता लगा सकते हैं। कुछ साँप अपने शिकार को घातक विष से मारते हैं, तो अन्य अपने शिकार को जकड़कर और गला घोंटकर मार डालते हैं। इनके लचीले जबड़े इन्हें अपने आकार से कई गुना बड़े भोजन को निगलने में मदद करते हैं। इनके खाने की सूची भी कमाल की है – छोटे कीड़ों, लार्वा और केंचुओं से लेकर कंगारू व मगरमच्छ तक।

अगर इनकी किस्मों की विविधता की बात करें तो आज दुनिया भर में साँपों की लगभग 4,000 किस्में हैं। इस मामले में भारत विश्व के सबसे अधिक विविधता सम्पन्न देशों में से एक है। यहाँ हाल ही में साँपों की 365 किस्मों का रिकॉर्ड दर्ज किया गया है। हर साल नई किस्मों के दर्ज होने से यह संख्या लगातार बढ़ रही है। भारत में साँपों के आकार की विविधता भी चौंकाने वाली है। एक ओर 25 फीट तक लम्बे रेटिकुलेटेड अजगर हैं, तो दूसरी ओर 19 फीट तक की लम्बाई वाला किंग कोबरा है जो दुनिया का सबसे लम्बा विषैला साँप है। वहीं बमुश्किल 4 इंच की लम्बाई वाला ब्राह्मणी ब्लाइंड साँप भी है, जिसे अक्सर केंचुआ समझ लिया जाता है। यह दुनिया के सबसे छोटे साँपों में से एक है।

साँपों के बारे में सबसे हैरान करने वाली बात शायद इनके पैरों का न होना है। पैरों वाले जन्तुओं से विकसित होकर इस अवस्था तक पहुँचने में इन्हें करोड़ों वर्ष लगे। अर्जेंटीना के पैटागोनिया पठार के बलुआ पत्थर की परतों में एक ऐसे साँप के जीवाश्म मिले हैं, जिसके पैर नहीं थे और जिसकी लम्बाई एक वयस्क इन्सान जितनी थी। वैज्ञानिकों ने इसका नाम *डिनिलीसिया पैटागोनिका* (*Dinilysia patagonica*) रखा और इसकी उम्र लगभग 8.5 करोड़ साल आँकी। चूँकि यह जीवाश्म ज़मीन पर बनी तलछटी चट्टानों में मिला, इसलिए हम जानते हैं कि यह साँप ज़मीन पर ही रहता था।

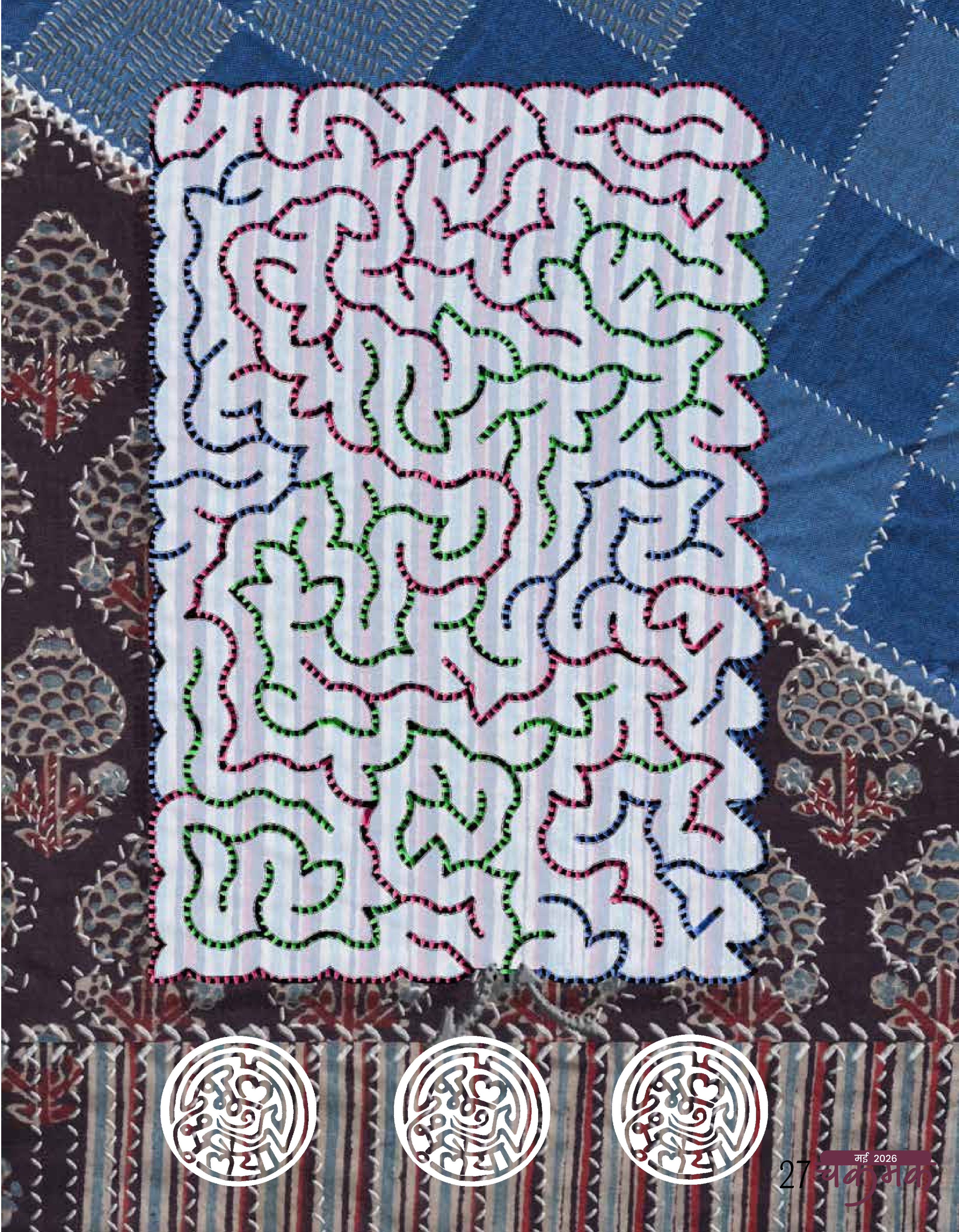

अभयारण्य में बाघ

चन्दन यादव
चित्र: शुभम लखेरा

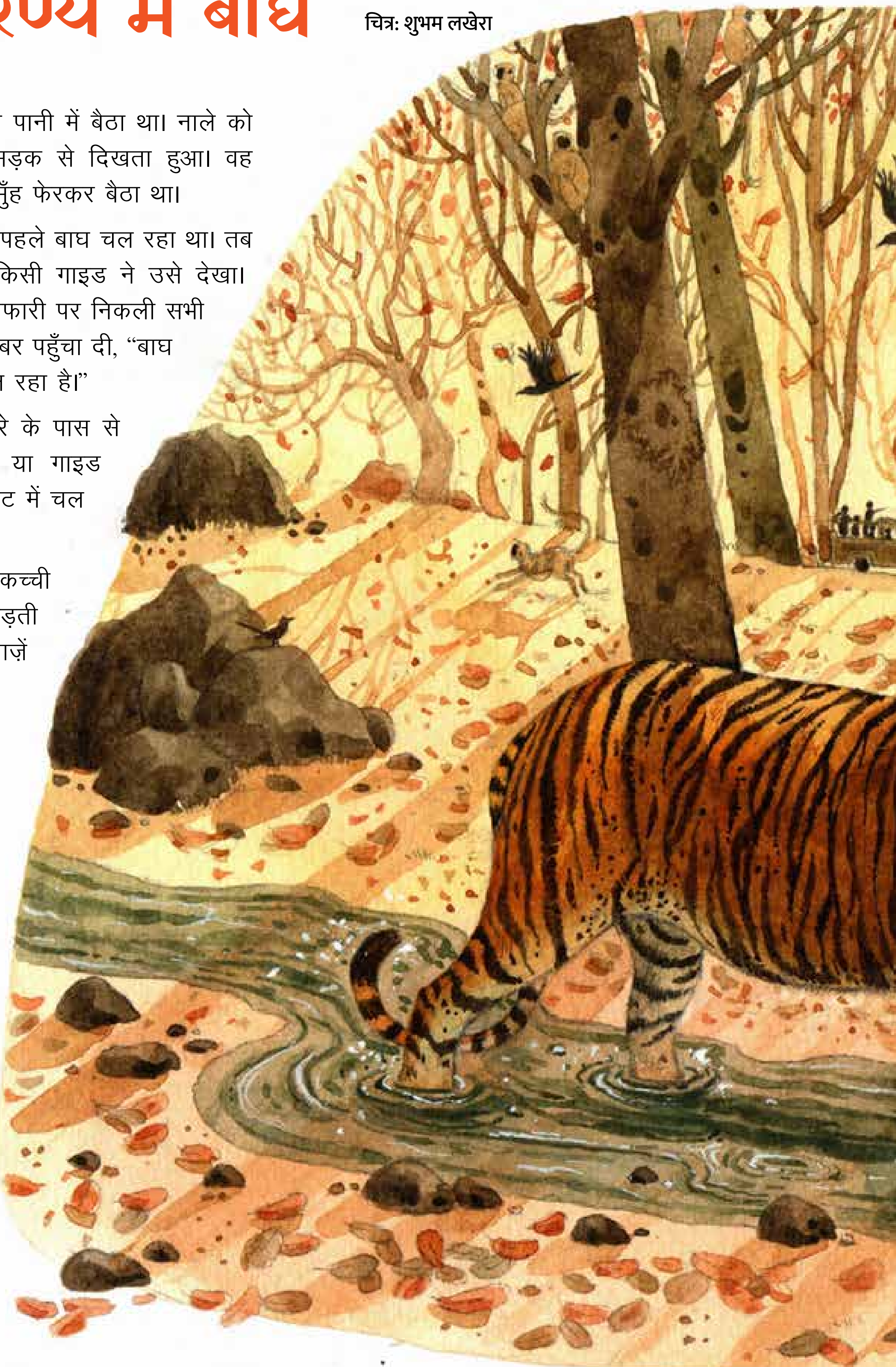

बाघ नाले के उथले पानी में बैठा था। नाले को पार करती कच्ची सड़क से दिखता हुआ। वह सड़क की तरफ से मुँह फेरकर बैठा था।

इस तरह बैठने से पहले बाघ चल रहा था। तब इस अभयारण्य के किसी गाइड ने उसे देखा। उसने वॉट्सऐप से सफारी पर निकली सभी जिप्सियों तक यह खबर पहुँचा दी, "बाघ नौ नम्बर बीट में चल रहा है।"

जिप्सियाँ एक दूसरे के पास से गुज़रतीं तो ड्राइवर या गाइड बताता, "नौ नम्बर बीट में चल रहा है।"

बाघ चलता रहा। कच्ची सड़कों पर दौड़ती जिप्सियों से आवाज़ें आती रहीं,

"चल रहा है।"

"नौ नम्बर में चल रहा है।"

"वो चल रहा है।"

बाघ कहने की ज़रूरत ही नहीं थी। सबको मालूम था कि बाघ चल रहा है। सब बाघ देखने ही सफारी पर आए थे। अब सभी जिप्सियों की मंज़िल नौ नम्बर बीट थी।

चलते-चलते जब नाला आया तो बाघ उसमें बैठ गया। उसे नौतपा की भीषण गर्मी से राहत चाहिए थी। नाला पार करते एक जिप्सी वाले ने उसे देखा। उसने वॉट्सऐप से सफारी पर निकली सभी जिप्सियों तक यह खबर पहुँचा दी,

"नौ नम्बर बीट के नाले में बैठा है।"

"नौ नम्बर बीट के नाले में बैठा है।"

"नौ नम्बर बीट के नाले में बैठा है।"

नाला पार करती कच्ची सड़क के दोनों तरफ जिप्सियों का मेला लग गया। बाघ ऐसे बैठा था कि नाले के एन ऊपर की सड़क से ही दिखता था। वह लोगों की तरफ से मुँह फेरे बैठा था। जितना दिख रहा था उतने बाघ को ही लोग बारी-बारी से देख रहे थे। कोई जिप्सी वाला देखने की जगह पर ज़रा ज्यादा रुक जाता तो कतार में रुकी दूसरी जिप्सियों के दर्शक झल्लाने लगते,

"ज़ल्दी आगे बढ़ो।"

"दूसरों को भी देखने दो।"

"आप तो फिर आ गए!"

"गाड़ी बढ़ाओ, सबको देखने दो।"

सब देर तक बाघ देखते रहे। बाघ देर तक वहीं बैठा रहा। उसके लिए यह रोज़ की बात थी। बाघ को पता था कि लोग उसे देखने आते हैं। इसलिए वह दिखने बैठा था। नहीं दिखना चाहता तो इतने बड़े अभयारण्य में कहीं ऐसी जगह बैठता कि किसी को ना दिखता!

फिर वह मुँह फेरकर क्यों बैठा था? क्या वह उसे देखने आए लोगों को नहीं देखना चाहता होगा!

चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे
19
8
5
2
10
12
18
15
22
11
1
4
13
16
7
17
13
14

			9			6		
			2				1	
	7	9			6	8		5
4				7	1		3	
					5		4	
					2		6	8
	8		7					
	6			8	3		9	2
	3	7				4	8	6

सुडोकू 96

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

1		■	2	■	3	■	4	5
■	■	6				■	■	
7	8	■		■	■	9		
■	10			■	11		■	■
■		■	12		■	■	13	
14		15		■	16	17		■
	■		■	18	■		■	19
	■	■	20		21	■	■	
■	22		■	■		■	23	

जवाब पेज 42 पर

अकाल और उसके बाद

नागार्जुन

चित्र: प्रशान्त सोनी

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद

टिप्पणी

नरेश सक्सेना

इस छोटी-सी कविता में चार पंक्तियों में अकाल का विवरण है और चार पंक्तियों में उसके बाद का दृश्य।

इन चार पंक्तियों में भी "कई दिनों तक" हर पंक्ति के शुरू में बार-बार दोहराया जाता है।

इसके बाद बहुत थोड़े से सरल शब्द बचते हैं जिसमें अकाल की कथा कही गई है। इस अकाल कथा की पहली चार पंक्तियों में मनुष्य कहीं नहीं है। बिम्बों में चूल्हा-चक्की हैं, कानी कुतिया है, चूहे हैं और छिपकलियाँ हैं।

अनाज नहीं है तो चूल्हा और चक्की तो उदास और उतरे हुए मुँह के होंगे ही। कुतिया है वह भी कानी। क्योंकि गरीब घर की है। सम्पन्न घर के कुत्ते तो झबरे बालों वाले सुन्दर कुत्ते होते हैं। रोटी की आस में चक्की के पास पड़े नहीं रहते। छिपकलियाँ भला क्यों भीतर परेशानहाल गश्त लगा रही हैं? क्योंकि वे तो दाल-रोटी खाती नहीं हैं, कीड़े खाती हैं। लेकिन जिस घर में भोजन नहीं है वहाँ तेल क्या होगा! लिहाज़ा रात को घर में दिया भी नहीं जलता होगा और कीड़े तो रात की रोशनी में आते हैं। दिन की रोशनी में नहीं आते। ऐसे में छिपकलियाँ भी भूख की मारी हैं। चूहे तो कुत्ते की तरह स्वामीभक्त होते नहीं। शिकस्त हाल चूहे उस घर में कर क्या रहे हैं?

चूँकि अकाल पड़ा है इसलिए गाँव के किसी घर में अन्न नहीं होगा। वरना चूहे वहाँ चले जाते। खेतों में तो अन्न होने का सवाल ही नहीं उठता! वरना हम जानते हैं कि चूहे खेतों से अन्न चुराकर अपने बिलों में घसीट ले जाते हैं।

बाद की चार पंक्तियों में हर पंक्ति का अन्त "कई दिनों के बाद" से होता है। जो भी होता है हर पंक्ति में कई दिनों के बाद होता है।

घर के भीतर दाने आते हैं। घर भर की आँखें चमक उठती हैं। अभी भोजन बना नहीं है। लेकिन अन्न की आहट ने ही आँखों में रोशनी भर दी है। उम्मीद इसी तरह रोशनी लाती है। फिर धुआँ उठता है छप्पर के ऊपर! यानी चूल्हा जल गया है। यह धुआँ शुभ संकेत दे रहा है। और कौए अब अपने पंख खुजला रहे हैं। क्योंकि इन पंखों से वे बहुत तेज़ी से उड़ते हैं और किसी भी थाली में झपट्टा मारकर अपने हिस्से की रोटी ले उड़ते हैं।

धुआँ देखकर वे भी उम्मीद से भर उठते हैं। कुत्ते, चूहे, छिपकलियाँ और कौए भी सामाजिक प्राणी हैं। वे बस्तियों में, घरों में मनुष्यों के साथ ही रहना चाहते हैं। उजाड़ में नहीं।

नागार्जुन की अकाल के एक बड़े दृश्य की इस छोटी-सी कविता में कोई कठिन शब्द तो है ही नहीं। तुम इस कविता को बार-बार पढ़ोगे तो बाकी खूबियाँ खुद उजागर होंगी। यह कविता भी दिल के धड़कने की ताल यानी कहरवा ताल (वही ताल जिसमें अक्कड़-बक्कड़, ट्विंकल-ट्विंकल जैसे गीत हैं) में है। इब्नबतूता कविता भी इसी ताल में है।

फटाफट बताओ

प्रश्न ये है कि
उत्तर क्या है?
(ाश्ऊी)

एक चीज़ देखी ऐसी
जिसके ऊपर दाँत
बिना मुँह खोले
करे रसीली बात

(मफनीम्प्रह)

घेरदार लहँगा है उसका
एक टाँग पर रहे खड़ी
सबको उसकी ज़रूरत होती
जब हो बरखा या धूप कड़ी

(ाफछ)

चढ़े नाक पर, पकड़े कान
जल्दी बताओ, उसका नाम

(ामश्च)

आँख में मेरी उँगली डालो
मुँह तभी मैं खोलूँ
कपड़ा, कागज़ सब खा जाऊँ
नाम मेरा अब बोलो
(ीचंकैं)

1. ज़ोया के पास 10 मोती हैं। उसने इन्हें चार मोतियों वाली तीन सीधी पंक्तियों में जमाया है। अब वो इन्हें चार मोतियों वाली 5 सीधी पंक्तियों में जमाना चाहती है। क्या तुम ऐसा करने में उसकी मदद करोगे?

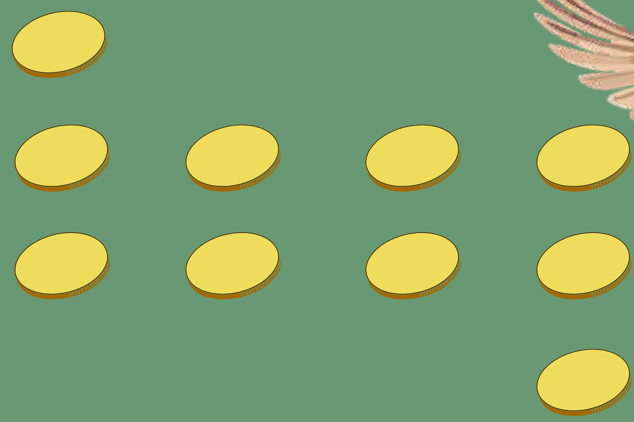

2. एक कमरे में 10 लोग हैं। हरेक व्यक्ति पूरे कमरे को और बाकी सभी लोगों को देख सकता है। कमरे में एक सेब रखा है। एक व्यक्ति को छोड़कर बाकी सभी उस सेब को देख सकते हैं। क्या तुम बता सकते हो वह सेब कहाँ रखा है?

3. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग कैमरे आने चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से कैमरे आएँगे?

4. एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करो।

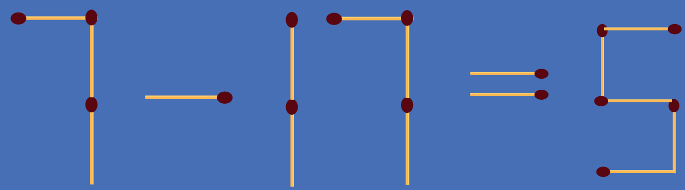

5. मीना की मम्मी की चार बेटियाँ हैं: मिनी, मोना और मीनू। बताओ चौथी बेटी का नाम क्या होगा?

6. गुरप्रीत ने अपने दोस्तों को बताया कि कल उसके ऊपर से एक बड़ा-सा वाहन गुज़र गया। लेकिन उसे बिलकुल भी चोट नहीं आई। वह झूठ नहीं बोल रही थी। पर ऐसा कैसे हो सकता है?

7. एक क्लास में 12 बच्चे थे। उनमें से 6 बच्चों ने मोज़े पहने थे और 4 ने जूते। 3 बच्चों ने जूते-मोज़े दोनों पहने थे। बताओ कितने बच्चे नंगे पैर थे?

8. केवल 2 तीलियों को इधर-उधर करके समान माप के दो त्रिभुज बनाना है। कैसे करोगे?

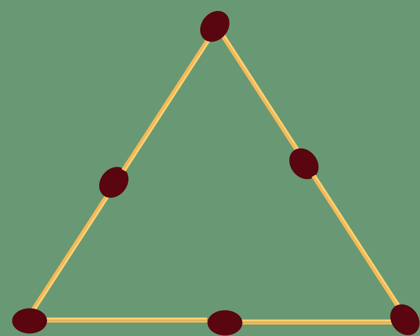

9. एक पेड़ पर 10 गौरैया बैठी थीं। 5 उड़ गईं, 3 सो गईं। 4 और आ गईं। बताओ पेड़ पर कितनी गौरैया बचीं?

10. दी गई ग्रिड में कई सारे पकवानों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

पा	व	मै	दा	ल	म	खा	नी	पू
चू	र	सू	ज	ले	श्री	खं	ड	र
म	ट	र	पु	ला	व	लि	का	न
मो	मो	पा	द	म	क	ट्टी	ज	पो
छो	मा	क	मो	ही	बा	चो	थु	ली
ला	दा	ल	बा	टी	ब	खा	क	रा
भ	डो	सा	पु	का	व	ड़ा	पा	व
टू	अ	प्प	म	आ	बि	र	या	नी
रा	ज	मा	चा	व	ल	जो	पा	मा

जवाब पेज 42 पर

मेरा पन्ना

मैं तो खाती जाती हूँ

अरसी
नौवीं
सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी
भोपाल, मध्य प्रदेश

मेरी अम्मी जब भी कुछ अच्छी चीज़ बनाती हैं तो मैं उनके पास बैठ जाती हूँ। जब वो रोटी बनाती हैं तो मैं खाती जाती हूँ और साथ ही साथ पानी भी पीती जाती हूँ। जब मैं खाना खाकर उठती हूँ तो मुझसे चलते नहीं बनता। फिर मैं अम्मी से कहती हूँ, “मुझसे चलते नहीं बन रहा।” तो अम्मी बोलती हैं, “बेटा इतना क्यों खा लिया?” मैं बोलती हूँ, “अम्मी, तुमने इतनी अच्छी सब्ज़ी बनाई थी। इसलिए खा ली।” फिर अम्मी बोलती हैं, “जा थोड़ा चल ले।” फिर मैं चली तो मेरा पेट सही हो गया।

चित्र: सोहम निंबालकर, सातवीं, प्रगत शिक्षण संस्थान, फलटण, सतारा, महाराष्ट्र

मोर की आवाज़ सुनने का इन्तज़ार

प्रज्ञा
तरंग समूह, दिगन्तर संस्था, जयपुर, राजस्थान

मेरे गाँव में एक खेत है। वो मुझे बहुत अच्छा लगता है। जब मैं छोटी थी तो मैं गाँव गई हुई थी। मैं रोज़ मेरे दादाजी और सारे भाई-बहन के साथ खेत पर जाती थी। खेत पर ठण्डी-ठण्डी हवा चलती थी। वह बहुत अच्छी लगती थी। मैं और मेरे भाई-बहन भागने की प्रतियोगिता करते और पकड़ा-पकड़ी खेलते। कभी-कभी दादाजी से उनके बचपन की बातें और पापा की शरारतों के बारे में पूछते। दादाजी बड़े ही मज़े से हमको सुनाते थे।

गाँव के खेत के पास एक बगीचा था। उस बगीचे में बहुत सुन्दर फूल थे, जैसे कि सूरजमुखी, गुलाब, चमेली। हम फूल के बगीचे के मालिक से अनुमति लेकर खेलते थे। खेत में हरियाली-हरियाली थी। एक दिन अचानक मैंने उस खेत में एक मोर देखा। वह बहुत सुन्दर था। इससे पहले मैंने कभी भी मोर नहीं देखा था। मैं उसे देखती ही रह गई।

अब मेरी सबसे प्यारी चीज़ है मोर। मोर की आवाज़ भी मुझे बहुत अच्छी लगती है। लेकिन उसकी आवाज़ समय-समय पर मुझे खेत पर ही सुनने को मिलती है। शाम होती है तो मोर की मधुर आवाज़ आती है। आज भी मैं जब भी गाँव जाती हूँ तो मोर को ज़रूर देखती हूँ और उसकी आवाज़ सुनने का इन्तज़ार करती हूँ।

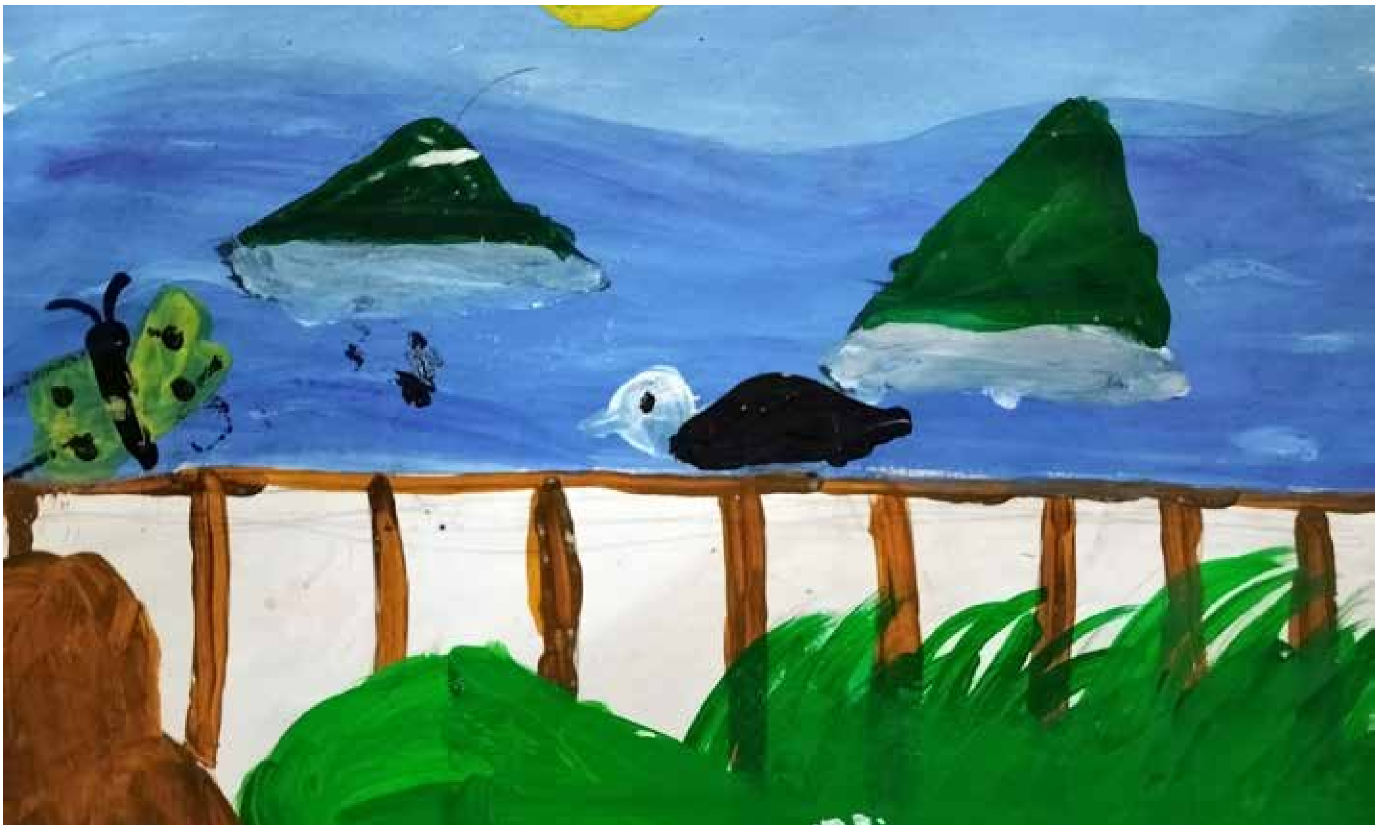

चित्र: ज़ोया, दूसरी, सलाम बालक ट्रस्ट, दिल्ली

मेरा पन्ना

गर्मी की छुट्टियाँ

पीहू कुमारी
आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन
पटना, बिहार

गर्मी की छुट्टियाँ, दोपहर का समय और लहकती धूप। घर में सब सो रहे थे। हम भाई-बहनों ने लूडो बोर्ड निकाला और गेम शुरू कर दिया। सिवाय मेरे, सबकी गोटियाँ निकल गई थीं। काफी देर बाद मेरे पासे में भी छह आ ही गया। फिर मैंने ऐसा गेम खेला कि सब पीछे छूट गए। पर जैसे ही मैं जीतने वाली थी मेरी बहन ने चिढ़कर बोर्ड हटा दिया। इस अधूरे गेम का विजेता मैं खुद को मानती हूँ।

चित्र: ऐश्वर्या भदंग, आठवीं, शासकीय आश्रम स्कूल, अमरावती, महाराष्ट्र (स्लम आउट लॉउड संस्था से प्राप्त)

घूमने की खुशी

लक्ष्य जोशी
पाँचवीं
नानकमत्ता पब्लिक स्कूल
नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर
उत्तराखण्ड

कहीं घूमने जाने की तो खुशी ही अलग होती है। और जब पता चले कि पहाड़ जा रहे हैं, तब तो दिल एकदम खुश हो जाता है। मैं पहाड़ के लिए निकलने लगा। मैं इतना खुश था जैसे स्वर्ग घूमने जा रहा हूँ। धूप निकली थी। हम मस्ती से पहाड़ को जा रहे थे। बीच में हमें हरे-भरे पेड़-पौधे, पहाड़ और शुद्ध पानी के बहते हुए झरने और नदियाँ दिखीं।

और भले ही हमें कुछ याद ना रहे पर उस ढाबे की जगह सबको याद होगी जहाँ स्वादिष्ट खाना मिलता है। और खाते समय ऐसा लगता है जैसे स्वर्ग का खाना मिल गया हो। आहा! और ऐसे ही मेरा घर आ गया। और जैसे ही मैं घर से बाहर निकलता तो मेरे मुँह में बस एक ही शब्द रहता, "नमस्कार"। और जब मैं आराम करने जाता तब मेहमानों की सूरत दिख जाती। फिर वहाँ बैठना पड़ता। अब कर भी तो कुछ नहीं सकते। अगर वहाँ नहीं बैठे तो मम्मी की डाँट खाने बैठना पड़ता। रात हो चुकी थी। इसलिए मैं सोने चला गया।

कुत्तों से डर

पूजा पांडे
छठवीं, ज़िला परिषद स्कूल, खुटाळा, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

हमारे गाँव में कुत्ते बहुत हैं। हमें कुत्तों से डर लगता है। कल रात 8 बजे की बात है। मैं दरवाज़े पर बैठकर पढ़ाई कर रही थी। दो लड़कियाँ रस्ते से जा रही थीं। एक कुत्ता भी वहीं था। वो अचानक उन लड़कियों पर झपटा। एक लड़की तो भाग गई। वो बच गई। मगर दूसरी लड़की को कुत्ते ने पकड़ लिया। वो चीख रही थी। उसे कुत्ता खा रहा था।

कुत्ते ने उसका मुँह पूरा खा लिया। मैंने ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाईं। कुत्ते ने लड़की को छोड़ दिया। पर लड़की के मुँह से खून बन्द नहीं हो रहा था। आजू-बाजू के लोग जमा हो गए। उनमें कुत्ते का मालिक भी था। वो लड़की को दवाखाना ले जा रहा था। बाद में उस लड़की की माँ भी दवाखाना गईं। मैं बहुत डर गई। कुत्ते से हमको हमेशा डर के ही रहना पड़ता है।

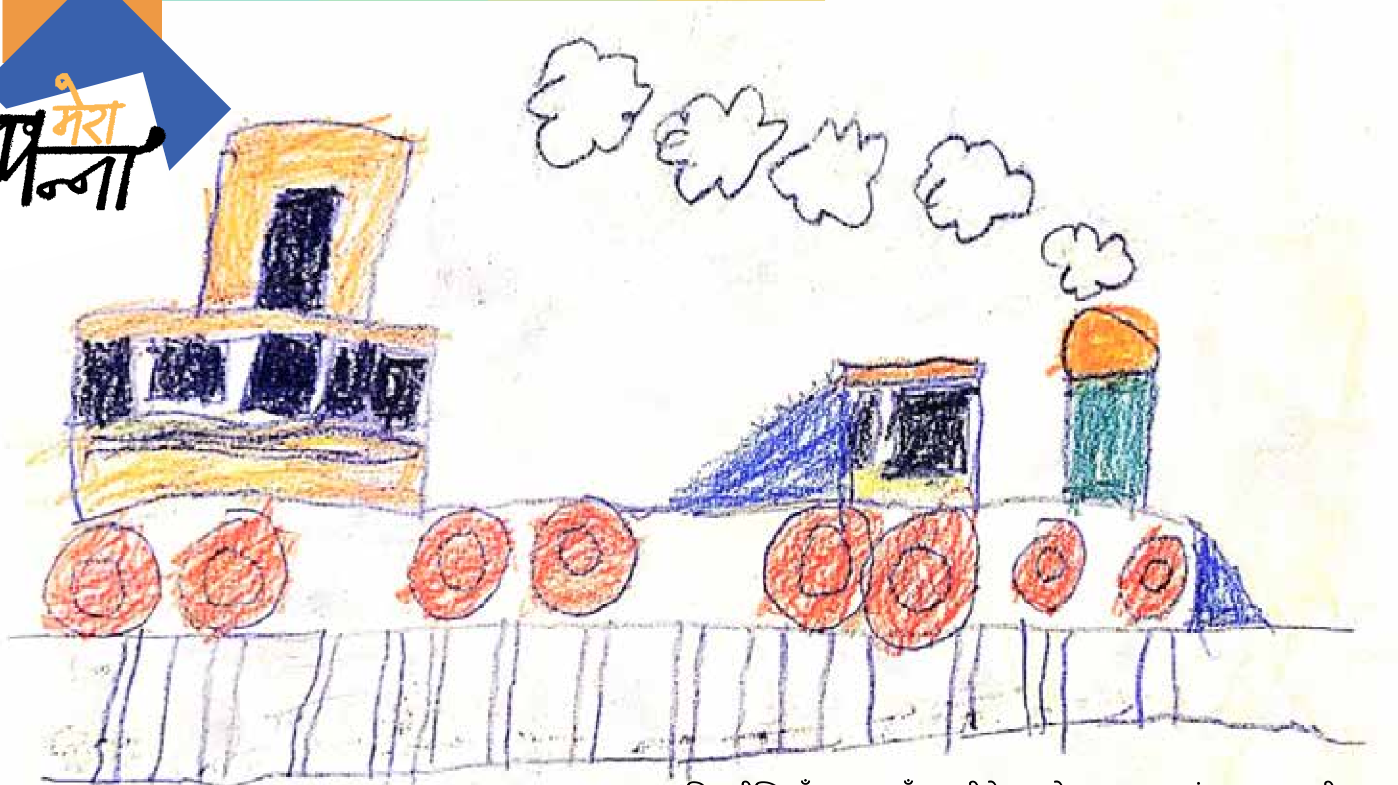

चित्र: दीप्ति, पाँच साल, आँगनवाड़ी केन्द्र, कोसमखूटा 2, आरंग, रायपुर, छत्तीसगढ़

उसकी याद आती है

दीपक बोहरा
दूसरी, विद्या विकास हाई स्कूल
बेंगलूरू, कर्नाटक

मेरा दोस्त अंजीत नेपाल जाने वाला था। अपने पापा के साथ उसके गाँव। हम साथ में बैडमिंटन खेला करते। साथ में उसके पापा की स्कूटी से स्कूल और ट्यूशन जाते। उसने जब बताया कि उसे नेपाल जाना है, तो मुझे लगा कि अब मैं किसके साथ स्कूल जाया करूँगा?

उन्हें जल्दी जाना था। इसलिए उसके पापा फ्लाइट देख रहे थे। हम में से कोई भी कभी फ्लाइट पर नहीं चढ़ा। मुझे फ्लाइट के क्रैश होने का डर लगता है। पहले मुझे लिफ्ट से भी डर लगता था। कहीं लिफ्ट बन्द हो जाए और मैं अन्दर फँसा रह जाऊँ तो?

मुझे अंजीत की चिन्ता हुई। मैंने उससे कहा कि अंजीत तुम अपने पापा से कहकर पीछे की सीट्स चुनना। अगर जहाज क्रैश करता है तो आगे वालों को ज़्यादा चोट आती है। पीछेवालों के पास कूदने का ज़्यादा टाइम होता है। अंजीत ने मेरी बात मान भी ली थी।

शायद तुरन्त टिकट बुक करने के पैसे ज्यादा लग रहे थे। इसलिए वे लोग फ्लाइट से नहीं गए। मुझे थोड़ी खुशी हुई। अंजीत पापा के साथ बस से गया। पर उसने मेरी बात मानकर बस में भी पीछे की ही सीट ली। बोला, “टक्कर तो बस की भी हो सकती है, दीपक।”

अंजीत बैडमिंटन अच्छा नहीं खेलता था। लेकिन बैडमिंटन खेलते हुए उसकी याद आती है।

आम के पेड़ का मज़ा

छाया अहिरवार
चौथी
शिक्षा प्रोत्साहन केन्द्र, मरोड़ा
एकलव्य फाउंडेशन, केसला
नर्मदापुरम, मध्यप्रदेश

हमारे घर तो आम का पेड़ नहीं है। पर हमारे बगल वाले दादा-दादी के घर ज़रूर आम का पेड़ है। हम गर्मियों में वहीं आम के पेड़ के नीचे खटिया पर बैठकर कैरियों का मज़ा लेते हैं।

हम तीनों बहनें और हमारा एक भाई हम सब बगल वाली दादी के घर चले जाते हैं। वहाँ पर दादा हमारे बहुत मज़े लेते हैं। बहुत सारी चीज़ें पूछते हैं। और हम वहीं बैठकर कैरी को छीलकर और काटकर एक प्लेट में रखते हैं। फिर नमक-मिर्ची पाउडर मिक्स करके उस कटी हुई कैरी में लगाते हैं। फिर आम के पेड़ की ठण्डी-ठण्डी हवा में बैठकर जब खाते हैं तो तुम्हीं अन्दाज़ा लगाओ कि कितना मज़ा आता होगा।

ऐसे मज़े लेते हैं हम गर्मियों की छुट्टियों में। क्या तुमने आम के पेड़ के बारे में कभी ऐसे सोचा है?

चित्र: मोनिका रावत, आठवीं, राजकीय इंटर कॉलेज, केवर्स, पौड़ी, गढ़वाल, उत्तराखण्ड

माथापच्ची

जवाब

1.

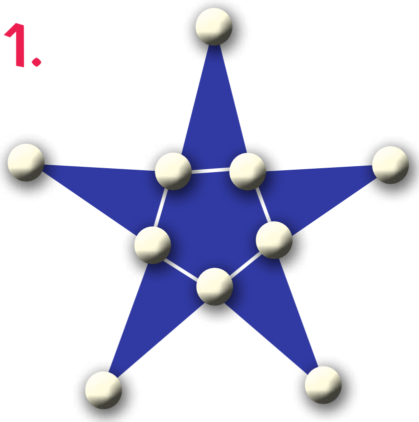

2. उस व्यक्ति के सिर पर।

4.

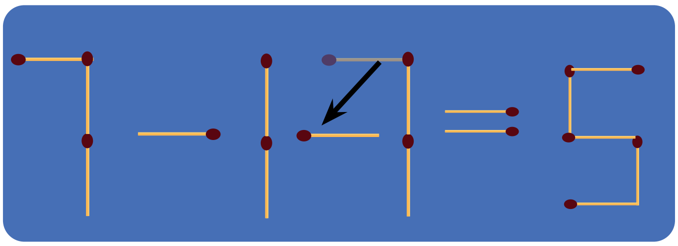

5. मीना की मम्मी लिखा है तो चौथी बेटी का नाम मीना ही होगा ना।

6. उसके ऊपर से हवाईजहाज़ गुज़रा था।

7. कुल बच्चे = 12, मोज़े पहनने वाले = 6, जूते पहनने वाले = 4 और मोज़े-जूते दोनों पहनने वाले = 3 मोज़े पहनने वाले और जूते पहनने वालों को जोड़ें तो हुआ 6 + 4 = 10, लेकिन जिन 3 बच्चों ने मोज़े-जूते दोनों पहने हैं, उनको हमने दो बार गिन लिया है। इसलिए उनकी संख्या घटानी होगी, यानी 10 – 3 = 7। तो 7 बच्चे ऐसे हैं जिन्होंने जूते या मोज़े (या दोनों) पहने हैं। इसलिए नंगे पैर वाले बच्चों की संख्या = 12 – 7 = 5

8.

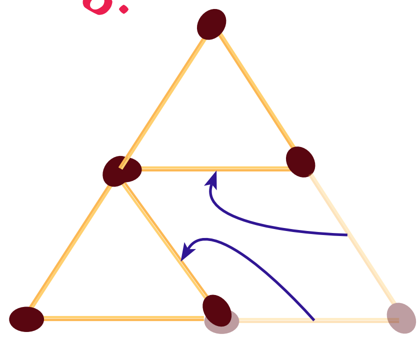

9. 5 उड़ गई तो 5 बचीं, जिनमें से 3 सो गई थीं। 4 और आ गई थीं, तो कुल गौरैया हुईं 4 + 5 = 9

10.

पा	व	मै	दा	ल	म	खा	नी	पू
चू	र	सू	ज	ले	श्री	खं	ड	र
म	ट	र	पु	ला	व	लि	का	न
मो	मो	पा	द	म	क	ट्री	ज	पो
छो	मा	क	मो	ही	बा	चो	थु	ली
ला	दा	ल	बा	टी	ब	खा	क	रा
भ	डो	सा	पु	का	व	ड़ा	पा	व
टू	अ	प्प	म	आ	बि	र	या	नी
रा	ज	मा	चा	व	ल	जो	पा	मा

3.

इस अंक की चित्रपहेली का जवाब

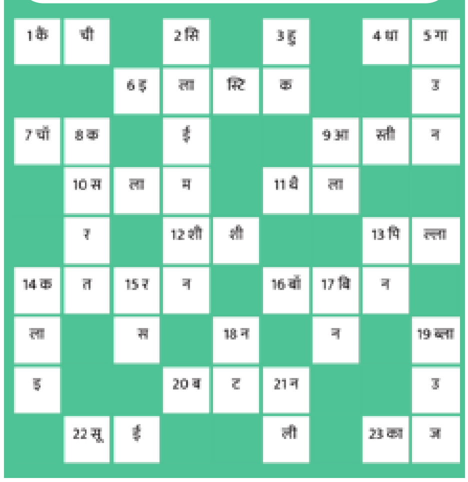

सुडोकू-96 का जवाब

2	1	5	9	3	8	6	7	4
8	4	6	2	5	7	9	1	3
3	7	9	4	1	6	8	2	5
4	5	8	6	7	1	2	3	9
6	2	3	8	9	5	1	4	7
7	9	1	3	4	2	5	6	8
9	8	2	7	6	4	3	5	1
1	6	4	5	8	3	7	9	2
5	3	7	1	2	9	4	8	6

चकमक तुम भी जानो

चाँद पर परमाणु रियेक्टर

अमेरिका की अन्तरिक्ष संस्था नासा (NASA) ने 2030 तक चाँद पर एक परमाणु रियेक्टर स्थापित करने की योजना बनाई है। इसके दो फायदे हो सकते हैं। एक तो, इससे चाँद तक जाने वाले अन्तरिक्ष यात्रियों और उनके शोध के लिए भरपूर ईंधन और ऊर्जा मिल सकेगी। दूसरा, भविष्य में मंगल तक जाने वाले अभियानों के लिए यह ऊर्जा का एक अहम स्रोत हो सकता है। तुम सोच रहे होगे कि जब सूरज है तो अलग से ऊर्जा-स्रोत की क्या ज़रूरत। असल में बात ये है कि चाँद अपने अक्ष पर उतनी ही गति से घूमता है जितनी गति से पृथ्वी अपने अक्ष पर घूमती है। इसलिए चाँद के किसी भी हिस्से पर 14 दिनों के लिए सूरज की रोशनी होती है और 14 दिनों वहाँ अँधेरा होता है। ऐसे में तापमान -180 डिग्री सेल्शियस तक पहुँच जाता है। इसलिए सौर्य ऊर्जा के अलावा किसी और ऊर्जा स्रोत का होना फायदेमन्द हो सकता है।

व्हेल फॉल

जब व्हेल मर जाती है तो उसके शरीर का विघटन जल्दी ही शुरू हो जाता है। गैस से उसका शरीर फूल जाता है और कभी-कभी समन्दर की सतह पर तैरता है। वहाँ शार्क और समुद्री पक्षी उस पर दावत करते हैं। कुछ समय बाद व्हेल का शरीर डूबने लगता है। कई किलोमीटर नीचे गिरते-गिरते वह समुद्र की तलहटी तक पहुँच जाता है। इस अवस्था में व्हेल के शव को 'व्हेल फॉल' कहा जाता है। यह जानवरों के एक पूरे ईकोसिस्टम के लिए पोषण का आधार बनता है। अमूमन सुनसान रहने वाली यह तलहटी अब अलग-अलग किस्म के बैक्टीरिया, कृमियों, मछलियों और अन्य जीवों से आबाद हो जाती है। व्हेल फॉल कम से कम 2 सालों के लिए इन जीवों के लिए आहार का स्रोत बन सकता है। इसके बाद व्हेल की हड्डियों को खाने वाले बैक्टीरिया और विघटन की प्रक्रिया से निकलने वाले रसायनों पर निर्भर कृमियों की आबादियाँ 50 सालों तक पनप सकती हैं।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

20% OFF

गर्मी की छुट्टियों का मज़ा
दोगुना करने के लिए हम तुम्हारे लिए लाए हैं
गतिविधि किताबों का एक मज़ेदार गुच्छा!

इसमें हैं चित्रपहेलियाँ, भूलभुलैया, ओरिगामी, चित्र बनाने और अपने रंग खुद तैयार करने के नुस्खे, कबाड़ से जुगाड़ और मज़ेदार माथापच्ची।

वह भी 20% छूट के साथ!
खुद के लिए लो और दोस्तों को तोहफे में भी दो।

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन